प्रसिद्ध
सचित्र कहानियां

विक्रम और बेताल

MAPLE KIDS

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

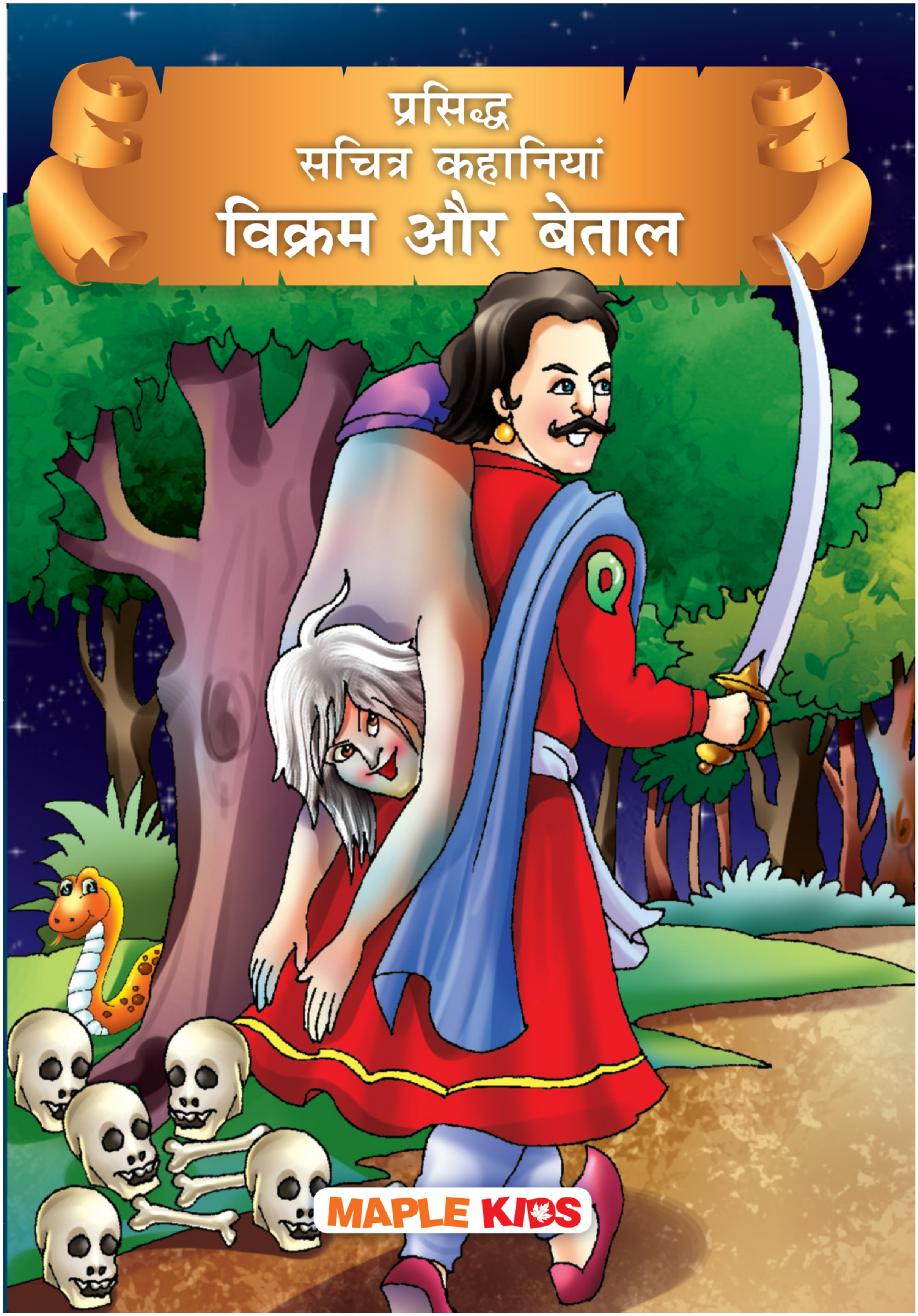

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

प्रसिद्ध

सचित्र कहानियां

विक्रम और बेताल

Maple Press

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

विषय-सूची

1. राजा विक्रमादित्य और तांत्रिक

2. चार राजकुमार

3. गुणवान भाई

4. रंजावती की दुविधा

5. सबसे बड़ा बलिदान

6. सुकुमार रानियां

7. राजा महेन्द्र का न्याय

8. राजा और दरबारी

9. कड़वा सच

10. उग्रसील और राजा वृशभानु

11. ईर्ष्या का फल

12. ब्राह्मण का पुत्र

13. दो पिता की कहानी

14. जब सपना सच हुआ

15. उपयुक्त पात्र

16. ब्राह्मण और बाज

17. घमंडी विद्धान

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

18. विक्रमादित्य का सिंहासन

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

राजा विक्रमादित्य और तांत्रिक

बहतु समय पहले की बात है, भारत में विक्रमादित्य नामक एक राजा थे| वे अपनी दयालुता और बुद्धिमानी के लिए जाने जाते थे | उनकी बहादूरी की खूब चर्चा हाती थी ।

एक दिन राजा विक्रमादित्य के दरबार में एक तांत्रिक आया। उसने राजा को उपहारस्वरूप एक फल दिया। जिसे राजा ने सप्रेम स्वीकार किया। उस अनोखे तांत्रिक ने राजा से फल को राजकोष में रखने का अनुरोध किया।

अगले दिन तांत्रिक फिर आया और राजा को एक और फल देकर राजकोष में रखने का अनुरोध किया। सालों तक यही क्रम चला। एक दिन कोषाध्यक्ष ने आकर राजा को एक अजीबोगरीब घटना बताई।

राजा दौड़ता हुआ राजकोष पहुंचा। तांत्रिक के द्वारा दिए गए सारे फल कीमती रत्नों में बदल चुके थे। किसी को भी इतने बहुमूल्य रत्नों को देखकर अपनी आंखों पर विश्वास नहीं हो रहा था। राजा और उसके मंत्री खुशी से फूले नहीं समा रहे थे।

अगले दिन तांत्रिक फिर आया। राजा ने अपने सिंहासन से उठकर आदरपूर्वक उसका नमन करते हुए कहा, "महात्मा जी, आपने दरबार में पधारकर हमारा तथा दरबार का मान बढ़ाया है। मुझे आशीर्वाद दें। बताइये मैं आपके लिए क्या कर सकता हूं?"

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

तांत्रिक ने कहा, "मेरा आशीर्वाद हमेशा तुम्हारे साथ है। पर हां, तुम मेरी एक मदद कर सकते हो.....।"

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

राजा विक्रमादित्य मदद मांगने वालों की हमेशा मदद करते थे। उसकी स्वीकृति पर तांत्रिक ने कहा, "घने जंगलों में एक पीपल का पेड़ है, उस पर एक शव लटका हुआ है। मुझे देवी को प्रसन्न करने के लिए उस शव की बलि देनी है। उस जंगल में जाने से लोग डरते हैं। तुम्हें अमावस की रात को उस जंगल में अकेले ही जाना होगा। क्या तुम मेरे लिए उस शव को ला पाओगे?"

राजा अमावस्या की रात को जंगल के लिए निकल पड़े। काली अंधेरी रात थी। जंगल में गहरा अंधकार था पर बिना विचलित हुए और बिना डरे, राजा आगे बढ़ते गए। जंगल के बीच में वे पीपल के पेड़ के पास पहुंचे। पेड़ के चारों ओर कंकाल, खोपड़ी और हड्डियां जमीन पर बिखरी हुई थीं। पेड़ पर उल्टा लटका हुआ एक सफ़ेद रंग का शव राजा को दिखाई दिया।

राजा पेड़ पर चढ़ गए। उन्होंने शव को बड़ी तेजी से उतारा और नीचे उतर आए। उसे कंधे पर डालकर राजा वापस चलने लगे। अचानक शव हंसने लगा। उसे हंसता देखकर राजा को एक झटका लगा, पर बिना डरे उन्होंने अपना चलना जारी रखा।

शव ने पूछा, "तुम कौन हो?"

राजा ने कहा, "मैं राजा विक्रमादित्य हू।"

"आप कौन हैं?" राजा ने शव से पूछा।

शव ने कहा, "मैं बेताल हूं। तुम मुझे कहां ले जा रहे हो?"

राजा ने बेताल को तांत्रिक की पूरी कहानी बता दी। कहानी सुनकर बेताल बोला, "मेरा और तांत्रिक का जन्म एक ही समय में हुआ था। अगर तांत्रिक मुझे प्राप्त कर लेगा, तो मुझे मारकर वह अपनी शक्ति बढ़ा लेगा और बाद में वह तुम्हें भी मार देगा। वह बहुत बड़ा धोखेबाज है।"

राजा सोच में पड़ गया। फिर बोला, "मैंने तांत्रिक से आपको लाने का वादा किया है। चाहे मेरी जान भी चली जाए, पर वादा निभाने के लिए मुझे आपको ले ही जाना पड़ेगा।"

बेताल राजा से प्रभावित हो गया और उसने राजा की मदद करने का निर्णय किया। वह राजा से बोला, "ठीक है, मैं तुम्हें कहानी सुनाकर अंत में प्रश्न पूछूंगा। अगर तुम्हारा उत्तर गलत हुआ तो तुम्हारे साथ चलूंगा, और अगर सही हुआ तो मैं वापस पेड़ पर चला जाऊंगा। अगर तुम चुप रहे तो तुम्हारा सिर फट जाएगा.... क्या तुम्हें मंजूर है...?"

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

बेताल जानता था कि राजा बुद्धिमानी है और हमेशा सच बोलेंगे तथा सही उत्तर ही देंगे। विक्रमादित्य के पास राजी होने के अलावा और कोई विकल्प ही नहीं था। बेताल ने अपनी कहानी सुनानी शुरू की।

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

चार राजकुमार

बहुत पुरानी बात है, मिथिला में उदयदित्य नामक एक बुद्धिमान राजा थे। वे अपनी प्रजा को बहुत प्रिय थे। उनकी प्रजा उन्हें उनकी दयालुता, समानता तथा न्यायप्रियता के लिए बहुत पसंद करती थी।

राजा की रूपमंजरी नामक एक पुत्री थी, जो बहुत ही बुद्धिमान तथा सुंदर थी। रूपमंजरी को जो भी देखता था, बस देखता ही रह जाता था। जब वह विवाह के योग्य हुई तो उसके लिए ढेरों रिश्ते आने लगे। राजा और रानी के लिए योग्य वर का चुनाव करने की समस्या खड़ी हो गई।

एक दिन उदयदित्य अपने सजे हुए दरबार में बैठे थे, तभी एक सुंदर राजकुमार वहां आया। आदरपूर्वक अभिवादन कर वह बोला, "मैं कलिंग का राजकुमार हूं और राजकुमारी से विवाह की इच्छा लेकर आया हूं।"

राजा ने कहा, "मैं तुम्हारी इच्छा का सम्मान करता हूं। कलिंग हमारा पड़ोसी और मित्र राज्य है। तुमसे राजकुमारी का विवाह करने से हमारे संबंध और भी गहरे बन जाएंगे। तुम राजवंश के भी हो परंतु तुममे ऐसी कौन सी विशेषता है, जो तुम्हें दूसरों से अलग करती है?"

राजकुमार बोला, "महाराज! मैं एक योद्धा हूं और बहुत अच्छे गुरुओं के द्वारा युद्धविद्दा में पारंगत हूं। मैं अपने देश की सेना का सेनापति हूं और कई युद्ध भी जीत चुका हूं।" राजकुमार की बात सुनकर राजा ने प्रसन्न होकर राजकुमार को अपने महल में राजकीय अतिथि के रूप में राजकुमारी का निर्णय आने तक रुकने के लिए कहा।

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

अगले दिन राजसभा में दूसरा राजकुमार उपस्थित हुआ और राजकुमारी के साथ विवाह करने की इच्छा से बोला, "महाराज, मैं जनकपुर का राजकुमार हूं। मैंने बहुत सारी धार्मिक

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

पुस्तकें पढ़ी हैं और काफी समय से जीवन का सत्य ढूंढ रहा हूं। ज्ञान की अपूर्व चाह ही मुझे सबसे अनुपम बनाती है।"

राजा राजकुमार से बहुत प्रभावित हुआ और उससे अपने महल के अतिथिगृह में कुछ दिन ठहरने के लिए कहा।

तीसरे दिन वैशाली का राजकुमार दरबार में उपस्थित हुआ और रूपमंजरी से विवाह की इच्छा से बोला, "महाराज, मुझे प्रकृति मां का आशीर्वाद प्राप्त है। मैं पशु-पक्षियों की भाषा को समझ सकता हूं।" राजा ने उसके गुण की प्रशंसा करते हुए उसे भी महल के अतिथिगृह में राजकुमारी के निर्णय तक रूकने के लिए कहा।

चौथे दिन मालव्य का राजकुमार आया। उसने भी राजकुमारी से विवाह की इच्छा बताते हुए कहा, "महाराज, मैं बहुत ही धनी राज्य का राजकुमार हूं। मेरा मानना है कि धन से ही प्रगति होती है। मैं एक व्यापारी हूं और धन से धन कमा सकता हूं।"

चारों राजकुमारों का विवरण सुनकर राजा और रानी अनिर्णय की स्थिति में आ गए। उन्हें कुछ समझ नहीं आ रहा था कि वे किसे अपनी पुत्री के योग्य वर चुनें। उन्होंने अंत में निर्णय राजकुमारी पर ही छोड़ दिया।

इतना कहकर बेताल रुक गया और राजा से पूछा, "राजन! आप ही बताइए राजकुमारी को किसे चुनना चाहिए? उसकी बुद्धिमानी और सुंदरता के हिसाब से कौन सबसे अधिक योग्य वर है?"

विक्रमादित्य ने तुरंत उत्तर दिया, "यदि राजकुमारी सच में बुद्धिमान है तो वह कलिंग के राजकुमार को चुनेगी। जनकपुर का राजकुमार विद्वान तो है, पर अच्छा शासक नहीं बन सकता है। वैशाली के राजकुमार पर प्रकृति मां की कृपा है, वह पशु-पक्षी की भाषा समझ सकता है, पर युद्ध की स्थिति में उसका यह गुण किस काम का? मालव्य का राजकुमार एक अच्छा व्यापारी तो है, पर राजा बनने के लायक नहीं है। यदि राजकुमारी समझदार है तो वह अपने लोगों के भले को देखते हुए कलिंग के राजकुमार को ही चुनेगी।"

"तुम सही हो राजन!" ऐसा कहकर हंसता हुआ बेताल उड़कर वापस पीपल के पेड़ पर चढ़ गया।

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

गुणवान भाई

बेताल पेड़ की शाखा से प्रसन्नतापूर्वक लटका हुआ था, तभी विक्रमादित्य ने वहां पहुंचकर, उसे पेड़ से उतारा और अपने कंधे पर डालकर चल दिए।

आकाश में से थोड़े-थोड़े बादल छंटने लगे थे और बादलों से तारे दिखने लगे थे। बेताल ने गहरी सासं लेकर राजा से कहा, "तुम हार नहीं मानते हो ... है न..?" राजा मुस्कराया और बेताल ने अपनी कहानी सुनानी शुरू की।

पाटलीपुत्र में कभी एक बहुत ही विद्वान ब्राम्हाण रहता था। वह बहुत ही विनम्र और धार्मिक था। उसके दो पुत्र थे। दोनों ही अपने पिता की तरह विनम्र थे। उनमें जन्मजात अदभुत गुण थे।

बड़े पुत्र में लोगों का चरित्र पहचानने की शक्ति थी। ऐसा करके वह लोगों को दूसरों के इरादे पहले से ही बताकर सावधान कर देता था। छोटा पुत्र किसी भी वस्तु को सुंघकर ही पहचान लिया करता था।

धीरे-धीरे ब्राम्हाण के दोनों पुत्रों की ख्याति चारों तरफ फैल गई और राजा के कानों तक भी पहूंची। राजा ने उन्हें बुलाकर अपने यहां विशेष सलाहकार के रूप में रख लिया।

दोनों भाई राजा को निर्णय लेने में मदद करने लगे। राजा जब राजनायिक वार्ताओं के लिए दूसरे राज्यों में जाते थे, तो दोनों ब्राम्हाण पुत्र भी साथ जाया करते थे| एक दिन राजा इसी प्रकार की यात्रा पर दूसरे राज्य गए हुए थे| वहां उनका भव्य स्वागत हुआ। राजा के सम्मान में उत्सव जैसा माहौल था और कई रंगारंग कार्यक्रम भी आयोजित किए गए थे|

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

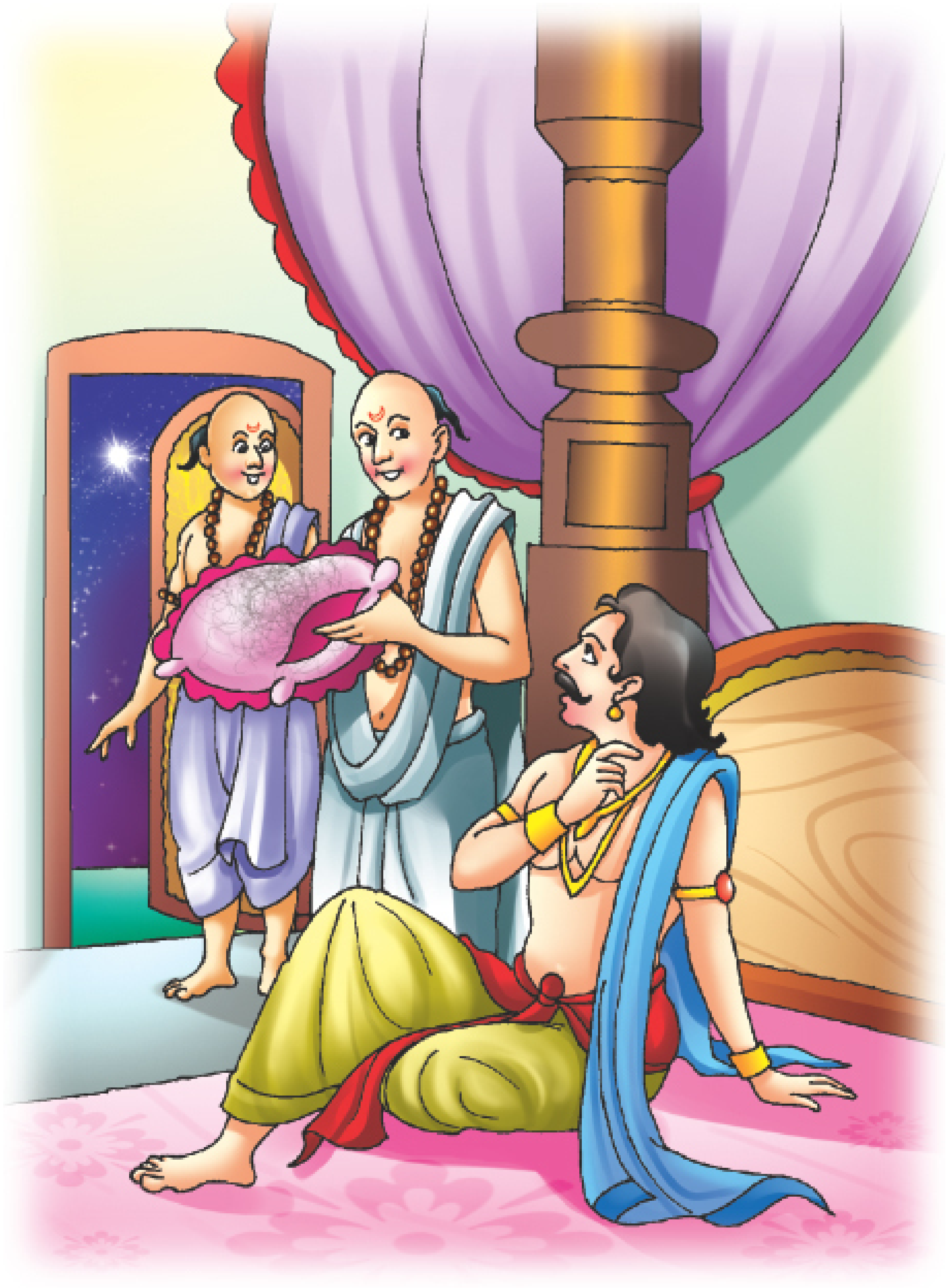

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

राजा और साथ गए लोगों ने भोज व कर्यक्रम का खूब आनंद उठाया । राजा बहुत थक गए थे| वे आराम करने के लिए राजकीय अतिथि गृह में गए। वह भी खूब सजा हुआ था| राजा ने दोनों भाइयों के साथ आरामगृह में प्रवेश किया । प्रवेश करते ही बड़े भाई को दाल में कुछ काला लगा । उसने कहा, महाराज, मुझे इस राज्य के राजा पर विश्वास नहीं है। वह आपसे ईर्ष्या करता है और आपको मारना चाहता है।"

उसकी बात सुनकर आश्चर्यचकित होते हुए राजा ने कहा, क्या बकवास कर रहे हो, उसने हमारी सुख-सुविधा का इतना ख्याल रखा है और तुम्हें लगता है कि वह हमें नुकसान पहूंचाने की योजना बना रहा है। मुझे लगता है बहुत ज्यादा खाना खाने से तुम्हारा दिमाग काम नहीं कर रहा है।" यह कहकर राजा बिस्तर पर बैठकर तकिया उठाने के लिए थोड़ा झुके... तभी बड़े भाई ने उनकी कलाई पकड़ ली।

"मुझे क्षमा करें महाराज, पर मुझे कुछ गड़बड़ लग रही है। उस तकिए पर लेटने से पहले आप उसकी जांच जरूर करवा लें।"

राजा परेशान तथा चिड़चिड़े हो गए। बड़े भाई की अवज्ञा न करते हुए उन्होंने छोटे भाई से तकिए की जांच करवाई। छोटे भाई ने पास आकर उसे सूंघा और कहा, महाराज, तकिए में जानवरों के बाल हैं। कुछ इतने नुकीले हैं कि लेटते ही चुभेंगे या चमड़ी काट देंगे। तकिए के किनारे पर लगी लेस पर जहर है जिससे आपकी जान भी जा सकती है।"

राजा ने तकिए को हाथ भी नहीं लगाया और सारी रात बिना तकिए के ही बिताई सुबह वे चुपचाप अपने साथ उस तकिए को लेकर अपने राज्य वापस लौट आये। तकिए की जांच करवाने पर दोनों भाइयों की सत्यता प्रमाणित हो गई। राजा ने दोनों भाइयों को उनकी सेवा के लिए बहुत सारा इनाम दिया।

बेताल ने कहा, "राजन, दोनों भाइयों में कौन अधिक चतुर तथा अधिक गुणी था?"

मुस्कराते हुए राजा ने उत्तर दिया, "बड़ा भाई। उसी ने मेजबान के गलत इरादे को भांपा था। उसी ने तकिए को भी पहचाना था। छोटे भाई ने तो बाद में बड़े भाई की शंका को सही बताया था।"

बेताल जोर-जोर से हंसने लगा। बेताल को यह खेल खेलने में मजा आने लगा था। उसने कहा, "राजन! तुम्हारा उत्तर बिल्कुल सही है" और वह उड़ा और पेड़ पर चला गया।

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

रंजावती की दुविधा

राजा विक्रमादित्य ने फिर से पेड़ पर चढ़कर बेताल को नीचे उतारा और अपने कंधे पर डालकर चल दिए। काली अंधेरी रात में चारों ओर झींगुरों की आवाज गूंज रही थी। सनसनाती हुई ठंडी हवा में कंधे पर लटके निर्जीव से बेताल ने अपनी कहानी शुरू की....

मगध की राजधानी में बिंदुशेखर नामक एक धनी व्यापारी रहता था। वह अपने समाज में अपने धन और शान-शौकत से रहने के लिए जाना जाता था। उसका एक बेटा था, जिसका नाम राजशेखर था।।

राजशेखर का बचपन का मित्र अविरूप थी। दोनों साथ-साथ खेलते-खाते बड़े हुए थे। दोनों में गहरी मित्रता थी। यदि कोई अनजान उन्हें देखता, तो भाई ही समझता था।

जवान होकर दोनों साथ-साथ घूमने जाया करते थे। एक नदी के किनारे दुर्गा मां का मंदिर था। दोनों मित्र नदी के किनारे आराम कर रहे थे, तभी राजशेखर ने एक बहुत सुंदर लड़की देखी। उसे देखते ही पहली नजर में वह अपना दिल हार गया और उससे प्रेम करने लगा। अविरूप उस लड़की को काफी पहले से ही जानता था और वह भी उससे प्रेम करता था। उसने अपने मित्र को बताया कि उस लड़की का नाम रंजावती है और वह धोबी जाति की है।

वे लोग प्रतिदिन रंजावती से मिलने लगे। अविरूप ने राजशेखर से कहा कि उसे माता-पिता को अपने मन की बात बता देनी चाहिए।

राजशेखर उदास होकर झुकी हुई आंखों से बोला “मैं जानता हूं, वे लोग इस रिश्ते के लिए कभी राजी नहीं होंगे। अपने से नीची जाति की कन्या को कभी स्वीकार नहीं करेंगे। उल्टे नाराज हो जाएंगे|” अविरूप यह सनुकर बहुत दु:खी हुआ।

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

धीरे-धीरे राजशेखर और रंजावती का प्रेम गहरा होता गया। जब राजशेखर के लिए असहनीय हो गया, तो वह दुर्गा माता के चरणों में गिरकर बोला, "मां! मैं रंजावती के बिना नहीं रह सकता। मैं उससे विवाह करना चाहता हूं। मैं आपसे प्रतिज्ञा करता हूं कि पूर्णिमा के दिन अपना सिर आपको अर्पित करूंगा। मुझे आशीर्वाद दीजिए।"

राजशेखर पर जैसे जुनून सवार हो गया था। उसने खाना-पीना भी छोड़ दिया। धीरे-धीरे उसकी हड्डियां निकल आयीं और वह सूखकर कांटा हो गया। माता-पिता को उसे देखकर चिंता होने लगी। आखिर एक दिन अविरूप ने उन्हें बताया कि राजशेखर को रंजावती से प्रेम हो गया है और वह आपकी सहमति के बिना उससे विवाह नहीं कर सकता।

पुत्र वियोग के डर से बिंदुशेखर और उसकी पत्नी ने राजशेखर और रंजावती के विवाह की अनुमति दे दी। धूमधाम से दोनों का विवाह हो गया और दोनों प्रसन्नतापूर्वक रहने लगे।

एक दिन राजशेखर, अविरूप और रंजावती उसी नदी के किनारे घूम रहे थे, जहां रंजावती को पहली बार उसने देखा था। राजशेखर को दुर्गा मां से की हुई अपनी प्रतिज्ञा याद आ गई। वह पूर्णिमा की प्रतीक्षा करने लगा।

वह पूर्णिमा के दिन मंदिर गया। हाथ जोड़कर देवी मां से प्रार्थना की, उनका आशीर्वाद लिया और फिर तलवार निकालकर अपना सिर काट लिया।

राजशेखर के वापस न लौटने पर रंजावती परेशान होने लगी। उसने राजशेखर को ढूंढने अविरूप को भेजा। मंदिर में राजशेखर का यह हाल देखकर अविरूप बहुत दुःखी हुआ। उसने दुर्गा मां से प्रार्थना की, "यदि मैं जाकर यह बताऊंगा, तो लोग यही कहेंगे कि मैंने उसकी सुंदर पत्नी को प्राप्त करने की इच्छा से राजशेखर को मार डाला है। मैं खुद को आपको अर्पित करता हूं। कृपया मेरा बलिदान स्वीकार करें।" यह कहकर उसने तलवार निकालकर अपना सिर देवी को अर्पित कर दिया।

अधीर रंजावती दोनों को ढूंढती हुई खुद मंदिर की ओर गई। मंदिर पहुंचकर खून से लथपथ दोनों के कटे सिर ढेखकर सकते वह सकते में आ गई। दुःख से विक्षिप्त होकर उसने दुर्गा मां से प्रार्थना की, "हे मां! मेरे जब पति अब इस दुनिया में नहीं हैं, तो मेरा जीवन किस काम का है..." ऐसा कहकर वह जैसे ही तलवार से अपना अतं करने लगी, वैसे ही एक तेज पुंज के साथ मां खुद प्रकट होकर बोलीं, "पुत्री, मैं इन दोनों विनम्र लोंगों के बलिदान से बहुत प्रसन्न हूं। तुम अपना अतं मत करो। तमु जैसे ही इनके शरीर पर इनके सिर लगाओगी, मैं इन्हें जीवन दान दे दूंगी।"

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

इतना कहकर दुर्गा मां अन्तर्ध्यान हो गईं आनन्द से भरी रंजावती ने दानों सिरों को धड़ से मिला दिया। पर भावना के अतिरेक में उसने राजशेखर के सिर को अविरूप के शरीर पर और अविरूप के सिर को राजशेखर के शरीर पर लगा दिया।

बेताल ने कहा, "राजन! तुम्हें क्या लगता है...रंजावती को किसे अपना पति स्वीकारना चाहिए?" विचारों में खोया हुआ राजा तुरंत बोला, "राजन! राजशेखर के सिर वाला शरीर रंजावती को चुनना चाहिए। क्योंकि सिर शरीर का मुख्य हिस्सा है और उसी से मनुष्य के व्यक्तित्व एवं चरित्र की पहचान होती है।"

राजा चतुराई से सही उत्तर देगा, यह बेताल को पता था। उसने कहा, "आप फिर से सही हैं" और हंसता हुआ बेताल पेड़ की ओर उड़ गया।

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

सबसे बड़ा बलिदान

राजा विक्रमादित्य बेताल के इस खेल से थकने लगे थे, पर वे अपने वायदे के पक्के थे। उन्होंने फिर से पीपल के पेड़ पर से बेताल को उतारकर कंधे पर डाला और चलने लगे।

बेताल को बहुत मजा आ रहा था। उसने पूछा, "आप कब तक ऐसा करना चाहते हैं?" राजा ने कहा, "यह तो तुम पर निर्भर है।" बेताल ने हंसकर कहा, "ठीक है, मैं अपनी कहानी शुरू करता हूं।"

बहुत पहले महाबलिपुर नामक शहर में चंद्रपति नामक एक धनी व्यापारी रहता था। उसकी मधुमाला नाम की एक सुंदर कन्या थी। एक बार किसी सामाजिक कार्यक्रम में मधुमाला की मुलाकात आदित्य नामक एक खूबसूरत, जवान युवक से हो गई। दोनों एक दूसरे से बहुत अधिक प्रभावित हुए और परस्पर प्रेम करने लगे।

उनका प्रेम बढ़ते-बढ़ते इतना बढ़ गया कि आदित्य ने मधुमाला से विवाह करने का निश्चय किया। आदित्य मधुमाला के पिता के पास उनकी अनुमति और आशीर्वाद लेने गया, पर चंद्रपति ने सर्वज्योति नामक किसी धनी सौदागर के साथ पहले ही अपनी पुत्री का विवाह निश्चित कर रखा था। आदित्य यह जानकर बहुत दुखी हो गया। उसका दिल टूट गया था।

वह मधुमाला की याद में दुखी रहने लगा। एक दिन उसने मधुमाला को भूल जाने का निर्णय लिया। पर मधुमाला उसके प्रेम को भुला नहीं पा रही थी। न चाहते हुए भी उसे परिवार की खुशी के लिए सर्वज्योति से विवाह करना पड़ा।

विवाह के पहले ही दिन मधुमाला ने आदित्य को एक पत्र लिखा कि वह उसके बिना नहीं रह सकती है। विवाह के तुरंत बाद वह सब छोड़कर उसके पास आ जाएगी और फिर दोनों साथ रहेंगे। विवाह की रात मधुमाला ने सर्वज्योति को सबकुछ सच-सच बता दिया। सर्वज्योति ने उससे कोई जबरदस्ती न करते हुए उसे आजाद कर दिया।

मधुमाला विवाह के जोड़े में आभूषण से लदी आदित्य के पास चल दी। रास्ते में उसे एक चोर मिला, जो सारे आभूषण लेना चाहता था।

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

मधुमाला ने आग्रह किया, “मैं अपने प्रेमी के पास जाने की जल्दी में हूं। उससे मिलने के बाद मैं तुम्हें सारे आभूषण दे दूंगी।” चोर को विश्वास तो नहीं हुआ फिर भी उसने मधुमाला को जाने दिया।

मधुमाला ने आदित्य के घर पहुंचकर दरवाजा खटखटाया। आदित्य बाहर निकला और उसे देखकर अचंभित रह गया। वह नाराज होता हुआ बोला, “तुम अब एक विवाहिता स्त्री हो। तुम्हें अपने पति के साथ होना चाहिए था। मैं किसी दूसरे की पत्नी के साथ नहीं रह सकता हूं। तुम वापस जाओ, यहां तुम्हारी कोई जगह नहीं है।” यह कहकर उसने दरवाजा बंद कर लिया।

मधुमाला बहुत रोई, पर भारी मन से उसे वापस लौटना पड़ा। रास्ते में फिर उसे चोर मिला। उसे देखते ही मधुबाला ने रोते-रोते अपने आभूषण उतारने शुरू कर दिए। चोर ने उसे रोता हुआ देख पूछा, “तुम रो रही हो?” मधुमाला ने उसे अपनी कहानी सुना दी। चोर बहुत दुखी हुआ और उसे सुरक्षित उसके घर पहुंचा दिया।

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

सर्वज्योति उसे वापस आया देख नाराज होता हुआ बोला, “तुम पराए आदमी के लिए घर छोड़कर चली गई थी। अब मैं तुम पर विश्वास नहीं कर सकता। मुझे क्षमा करो, अब मैं तुम्हें पत्नी के रूप में स्वीकार नहीं कर सकता। तुम जा सकती हो।”

मधुमाला पर तो मानो दुखों का पहाड़ टूट पड़ा। अब वह कहां जाती शर्मिंदगी के कारण मधुमाला ने नदी में डूबकर अपनी जान दे दी। बेताल ने थोड़ा रुककर राजा से पूछा, “राजन! आपके विचार में सबसे बड़ा बलिदान किसका था?”

राजा ने कहा, “बलिदान वह होता है जो स्वार्थरहित तथा स्वेच्छा से किया जाता है। आदित्य ने मधुमाला का प्रेम ठुकराया पर किसी कारण से। मधुमाला किसी दूसरे की पत्नी थी और वह किसी दूसरे की पत्नी के साथ नहीं रह सकता था।”

सर्वज्योति ने मधुमाला को जाने तो दिया पर वापस नहीं ले सकता था, क्योंकि उसे उस पर विश्वास नहीं था। मधुमाला ने शर्मिंदगी के कारण अपनी जान दी. .. इन सभी को बलिदान नहीं कहा जा सकता है। बलिदान तो चोर ने दिया। चोरी करके वह अपनी जीविका चलाता है। उसे मधुमाला पर दया आई और उसने उसके आभूषणों को नहीं लिया। उसकी इंसानियत बलिदान का सर्वोत्तम उदाहरण है।

“मुझे पता था कि तुम सही उत्तर दोगे...” बेताल ने कहा और उड़कर वापस पेड़ पर चला गया। विक्रमादित्य मुड़े और फिर पेड़ की ओर चल दिए।

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

सुकुमार रानियां

बेताल पेड़ की शाखा से प्रसन्नतापूर्वक लटका हुआ था, तभी विक्रमादित्य ने फिर वहां पहुंचकर, उसे पेड़ से उतारा और अपने कंधे पर डालकर चल दिए। रास्ते में बेताल ने अपनी कहानी सुनानी शुरू की।

पुरुषपुर के राजा देवमाल्य अपनी प्रजा के बीच अपने साहस और बुद्धिमानी के लिए जाने जाते थे। उनकी तीन रानियां थीं, जिन्हें राजा बहुत प्यार करते थे। उन रानियों में एक विशेष बात थी।

एक दिन की बात है, राजा देवमाल्य अपनी बड़ी रानी शुभलक्ष्मी के साथ बगीचे में टहल रहे थे। तभी एक नरम गुलाबी फूल पेड़ से टपका और रानी के हाथों को छूता हुआ गिर पड़ा। रानी की चीख निकली और वह बेहोश हो गई। रानी इतनी सुकुमार थी कि फूल ने उसके हाथों को घायल कर दिया था। राजा ने तुरंत शहर के अच्छे वैद्यों को बुलवाया। रानी का इलाज शुरू हुआ और वैद्यों ने वुछ दिन आराम करने की सलाह दी।

उसी रात राजा अपने महल की बालकनी में अपनी दूसरी पत्नी चन्द्रावती के साथ आराम से बैठे थे। चांदनी रात थी। ठंडी हवा के झोंके, बगीचे के फूलों की खुशबू लिए आ रहे थे। वातावरण बहुत मादक हो रहा था। तभी चन्द्रावती चीखने लगी, “मैं यह चांदनी बर्दाश्त नहीं कर सकती। यह मुझे जला रही है। ”

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

परेशान राजा ने तुरंत उठकर सारे परदों को गिरा दिया, जिससे चांदनी अंदर नहीं आ सके। वैद्य बुलाए गए। उन्होंने पूरे शरीर पर चंदन का तेल लगाया और आराम करने की सलाह

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

दी।

एक दिन राजा की इच्छा अपनी तीसरी पत्नी मृणालिनी से मिलने की हुई। मृणालिनी तीनों में सबसे सुंदर रानी थी। राजा के निमंत्रण पर वह राजा के कमरे की ओर जा रही थी कि अचानक ही वह चीखकर बेहोश हो गई। आनन-फानन में चिकित्सक बुलवाए गए। उन्होंने देखा कि उसके दोनों हाथ फफोलों से भर गए हैं। होश में आने पर रानी ने बताया कि आते समय उसने रसोईघर से आती चावल कूटने की आवाज सुनी थी। वह आवाज असहनीय थी।

बेताल ने पूछा, “ राजन अब आप बताइए कि तीनों रानियों में सबसे संवेदनशील और सुकुमार कौन सी रानी थी? ”

विक्रमादित्य ने धीरे से कहा, “ तीसरी रानी... यों तो तीनों रानियां सुकुमार थीं, पर शुभलक्ष्मी और चंद्रावती को तो फूल और चांद की चांदनी ने स्पर्श किया था, जबकि मृणालिनी तो सिर्फ चावल कुटने के आवाज से घायल हो गई थी। इसलिए सबमें वही सबसे अधिक संवेदनशील थी। ”

“आप सही हैं राजन ”, यह कहता हुआ बेताल उड़कर वापस पेड़ पर चला गया।

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

राजा महेन्द्र का न्याय

पेड़ से उल्टे लटके बेताल को राजा विक्रमादित्य ने फिर से पेड़ पर चढ़कर नीचे उतारा और अपने कंधे पर डालकर चल दिए। बेताल मन ही मन राजा के धैर्य और साहस की प्रशंसा कर रहा था। बेताल ने फिर से कहानी शुरू कर दी।

कभी वाराणसी में राजा महेन्द्र का शासन हुआ करता था। वे राजा विक्रमादित्य की तरह दयालु और धैर्यवान थे। नैतिकता से भरपूर वह बहुत ही उदार शासक थे। उनके इन्हीं गुणों के कारण प्रजा उन्हें बहुत पसंद करती थी।

उसी शहर में धनमाल्य नाम का एक बहुत ही धनी व्यापारी रहता था। वह दूर-दूर तक अपने व्यापार और धन के लिए प्रसिद्ध था। धनमाल्य की एक खूबसूरत जवान पुत्री थी। लोग कहते थे कि वह इतनी सुंदर थी कि स्वर्ग की अप्सराएं भी उससे ईर्ष्या करती थीं। उसके काले लंबे बाल ऐसे लगते थे, जैसे काली घटा हों, त्वचा दूध के समान सफेद थी और स्वभाव जंगल के हिरण की तरह कोमल था।

राजा ने भी उसकी तारीफ सुनी। उसे प्राप्त करने की इच्छा राजा के मन में जागृत हो गई। राजा ने अपनी दो विश्वासपात्र सेविकाओं को बुलवाया और कहा, " तुम लोग व्यापारी के घर जाकर उसकी पुत्री से मिलो। लोगों की बातों की सच्चाई का पता करो कि सच में वह रानी बनने योग्य है या नहीं। " सेविकाएं अपने कार्य के लिए चल दीं।

वेष बदलकर वे व्यापारी के घर पहुंचीं। व्यापारी की पुत्री की सुंदरता को देखते ही वे आश्चर्यचकित, मंत्रमुग्ध सी खड़ी की खड़ी रह गयीं। पहली सेविका बोली, " ओह! क्या रूप है! राजा को इससे विवाह जरूर करना चाहिए।" दूसरी सेविका बोली, "तुम सही कह रही हो। ऐसा रूप मैंने आज से पहले नहीं देखा। राजा तो इसके ऊपर से अपनी नजर ही नहीं हटा पाएंगे।"

थोड़ी देर दोनों ने सोचा फिर दूसरी सेविका ने कहा, " तुम्हें लगता नहीं है कि यदि राजा ने इससे विवाह किया तो उनका ध्यान काम से हट जाएगा? " पहली स्वीकृति में गर्दन हिलाकर बोली, "तुम सही कह रही हो। यदि ऐसा हुआ तो राजा अपने राज्य और प्रजा पर ध्यान नहीं दे पाएंगे।" दोनों ने राजा को सच न बताने का निर्णय किया।

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

राजा को उन पर बहुत भरोसा था। राजा को जैसा बताया गया उसी को उन्होंने सही मान लिया, पर उनका दिल टूट गया। एक दिन धनमाल्य खुद अपनी पुत्री के विवाह का प्रस्ताव लेकर राजा के पास आए पर दुखी राजा ने बिना सोचे प्रस्ताव ठुकरा दिया।

निराश होकर धनमाल्य ने पुत्री का विवाह राजा के एक दरबारी से कर दिया। जीवन रूपी गाड़ी चल रही थी। कुछ दिन बीत गए।

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

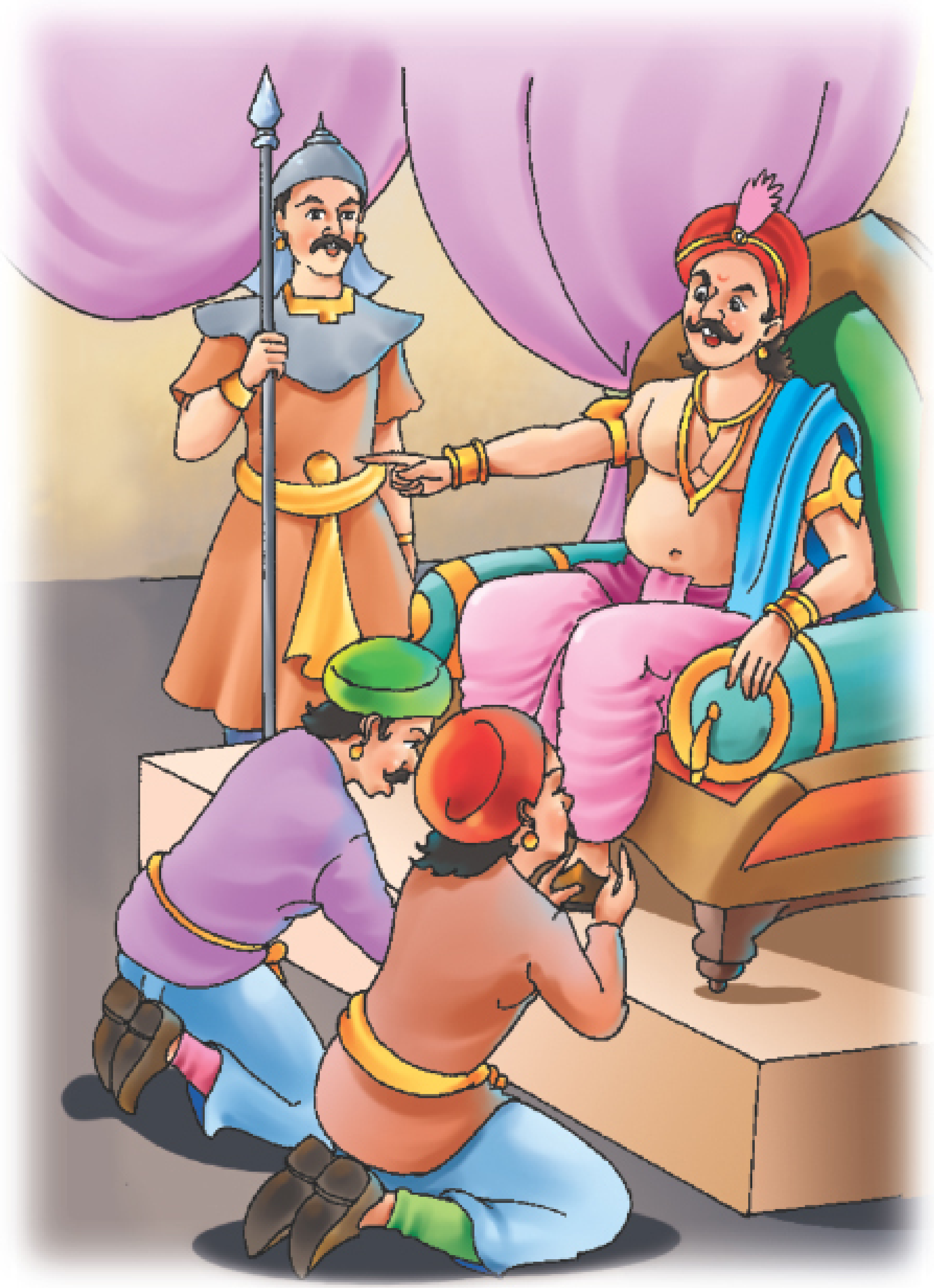

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

एक दिन राजा अपने रथ पर सवार होकर अपने दरबारी के घर की ओर से गुजरे। उनहोंने खिड़की पर एक बहुत सुंदर स्त्री को खड़ा देखा। राजा उसके रूप से बहुत प्रभावित हुए। राजा ने सारथी से पूछा, “मैंने ऐसा रूप पहले कभी नहीं देखा है। यह खिड़की पर खड़ी स्त्री कौन है?”

सारथी ने कहा, “महाराज, यह व्यापारी धनमाल्य की इकलौती पुत्री है। लोग कहते हैं कि स्वर्ग की अप्सराएं भी उसके रूप से ईर्ष्या करती हैं। आपके एक दरबारी से ही उसका विवाह हुआ है।”

राजा क्रोधित होता हुआ बोला, “यदि तुम्हारी बातों में सच्चाई है तो दोनों सेविकाओं ने मुझसे झूठ कहा है। तुरंत उन्हें मेरे पास बुलाया जाए। मैं उन्हें मृत्युदंड दूंगा।”

दोनों सेविकाएं राजा के सामने बुलवाई गयीं। आते ही दोनों राजा के पैर पकड़कर क्षमा प्रार्थना करने लगीं। उन्होंने सारी बात राजा को बता दी। पर राजा ने उनकी बातों पर ध्यान न देते हुए उन्हें तुरंत मृत्युदंड दे दिया।

कहानी पूरी कर बेताल ने कहा, “प्रिय राजन! दोनों सेविकाओं को मृत्युदंड देने का राजा महेन्द्र का निर्णय क्या आपको सही लगता है?”

विक्रमादित्य ने जवाब दिया, “एक सेवक का कर्तव्य अपने स्वामी की आज्ञा मानना है। सेविकाएं सजा की हकदार थी। उन्हें राजा को जैसा देखा था वैसा ही बताना चाहिए था। पर उन्होंने ऐसा नहीं किया। उनका इरादा बुरा नहीं था। राजा और राज्य की भलाई के लिए ही उन्होंने सोचा था। उनका कार्य स्वार्थहीन था। इस परिपेक्ष में राजा का उन्हें मृत्युदंड देना उचित नहीं था।”

“बहादुर राजा, आपने फिर से सही उत्तर दिया।” ऐसा बोलते हुए बेताल हवा में उड़ता हुआ फिर से पेड़ पर चला गया।

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

राजा और दरबारी

विक्रमादित्य ने फिर से बेताल को पेड़ से उतारकर कंधे पर डाला और चलना शुरू कर दिया। बेताल ने भी अपनी कहानी सुनानी शुरू की।

बहुत समय पहले की बात है... माणिक्यपुर के विशाल राज्य पर राजा पुण्यव्रत का राज्य था। राजा दयालु और बुद्धिमान होने के कारण प्रजा को बहुत प्यारे थे। वह एक बहुत ही साहसी राजा थे। अपने युद्ध कौशल से उन्होंने कई राज्यों पर जीत का झंडा फहराया था। राजा को शिकार में बहुत आनंद आता था।

एक दिन राजा पुण्यव्रत जंगल में शिकार खेलने गए। एक बहुत सुंदर चितकबरे हिरण का पीछा करते-करते वह जंगल में काफी अंदर तक चले गए। अचानक हिरण उनकी नजरों से ओझल हो गया पर राजा अपना रास्ता भूलकर जंगल में भटकने लगे।

घंटों जंगल में घूमने के बाद भी उन्हें रास्ता नहीं मिला। अंधेरा घिरने लगा था। राजा का भूख, प्यास और थकान के कारण बुरा हाल था। वे अपने घोड़े से नीचे उतरे ही थे कि अचानक उन्हें हाथ में लालटेन लिए हुए कोई अपनी ओर आता दिखाई दिया।

सावधान राजा ने तुरंत अपनी तलवार निकाल ली। वे किसी भी अनहोनी से निबटने के लिए अब तैयार थे। फिर उन्हें लगा कि वह आदमी उनकी मदद करना चाहता है।

पास आकर उसने कहा, “महाराज, मुझे लगता है कि आप अपना रास्ता भूल गए हैं।” “तुम सही कह रहे हो।” राजा ने उत्तर दिया।

उसने फिर कहा, “मैं आपके लिए भोजन और पानी लाया हूं। आप बहुत थक गए हैं। अभी आराम कीजिए। सुबह हम लोग रास्ता ढूंढ लेंगे।”

उस युवक के अनुरोध पर राजा ने उसका लाया भोजन और पानी ले लिया। भोजन कर जैसे ही वह पेड़ के नीचे लेटे, उन्हें नींद ने अपने आगोश में ले लिया।

अगली सुबह जागने पर राजा ने उस युवक को हाथ में छड़ी लेकर पहरा देते हुए देखा। राजा ने उसकी भक्ति से प्रसन्न होकर उसका नाम पूछा। युवक ने उत्तर दिया, “महाराज,

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

मेरा नाम प्रताप है।” राजा ने फिर पूछा, “क्या तुम मेरे दरबार में रहकर मेरी सेवा करना चाहोगे?”

प्रताप ने अपनी स्वीकृति दे दी। उसकी प्रसन्नता का ठिकाना नहीं था। वे दोनों रास्ता ढूंढते हुए महल चले आए और प्रताप महल में दरबारी के रूप में राजा की सेवा करने लगा।

काफी समय बीत गया। प्रसन्न और संतुष्ट प्रताप ने एक दिन वापस उसी जगंल में उसी जगह जाने का निणर्य किया, जहां पहली बार वह राजा से मिला था। वहां पहुंचने पर उसे एक सुंदर लड़की दिखाई दी। उसे देखते ही वह उसकी सुंदरता का कायल हो गया और उससे विवाह करने की अपनी इच्छा उसके सामने रख दी।

उसके प्रस्ताव को सुनकर लड़की ने कहा, “आप कल आएं, तब मैं आपको अपना निर्णय बताऊंगी।” प्रताप वापस चला गया पर सारी रात उसी लड़की के बारे में सोचता रहा। उसे एक पल के लिए भी नींद नहीं आई। सुबह उसने राजा के पास जाकर उन्हें सारी बात सच-सच बता दी।

राजा और प्रताप दोनों साथ-साथ जंगल पहुंचे। वह कन्या प्रतीक्षा कर रही थी। उसे राजा के आने का अनुमान भी नहीं था। राजा को सामने देखकर उसने कहा, “महाराज, कृपया आप मुझसे विवाह कर मुझे अपनी रानी बनाएं।” कन्या की बात सुनकर राजा और प्रताप दोनों को ही झटका सा लगा। प्रताप ने उत्तर दिया, “महाराज, यह कन्या रानी बनने के लिए उपयुक्त है। यदि आपकी इच्छा इससे विवाह करने की है, तो आप जरूर कर लें। मैं आपके लिए अपना प्यार छोड़ सकता हूं।”

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

प्रताप की स्वामिभक्ति से प्रसन्न राजा ने मुड़कर उस कन्या से कहा, “इस युवक को तुमसे प्रेम है। अपने दरबारी द्वारा चुनी गई महिला से मैं कभी भी विवाह नहीं कर सकता और वह

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

भी प्रताप जैसे स्वामिभक्त सेवक से.... प्रताप तुम्हारा बहुत ध्यान रखेगा। तुम उससे विवाह कर सभी राजसी ठाठ का आनंद उठाओगी।”

विवाह का मुहूर्त निकलवाकर राजा ने प्रताप और उस कन्या का विवाह धूम-धाम से करवा दिया। दोनों सुखपूर्वक रहने लगे।

कहानी खत्म कर बेताल ने प्रश्न पूछा, “महाराज बताइए, दोनों में कौन अधिक उदार था... राजा या उसका दरबारी?”

राजा विक्रमादित्य ने उत्तर दिया, “राजा और उनका दरबारी दोनों ही बराबर के उदार थे। राजा के लिए प्रताप अपने प्रेम का बलिदान देने को तैयार था, जबकि राजा ने उस प्रस्ताव को ठुकरा दिया क्योंकि उनके दरबारी ने अपने लिए उस कन्या को चुना था। राजा चाहता तो एक शासक होने के कारण आसानी से उस कन्या से विवाह कर सकता था। राजा नैतिक मूल्यों में बहुत विश्वास करता था। एक राजा की शोभा भी इसी में है, और इस कारण राजा की उदारता बड़ी है।”

बेताल सही उत्तर पाकर प्रसन्न हो गया और खुद को राजा से छुड़ाकर हवा में उड़ता हुआ पेड़ पर जाकर लटक गया।

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

कड़वा सच

राजा विक्रमादित्य ने फिर से पेड़ पर चढ़कर बेताल को नीचे उतार लिया और अपने कंधे पर डालकर चल दिए। बेताल हंसता रहा और राजा चुपचाप चलते रहे। राजा को दृढ़ प्रतिज्ञ चलता देखकर बेताल ने कहा, "ठीक है राजन, दूसरी कहानी सुनाता हूं..."

एक बार की बात है... वैशाली पर राजा चंद्रघर का शासन था। वह बहुत ही दयालु राजा थे। कहा जाता था कि कोई भी याचक उनके दरबार से खाली नहीं लौटता था।

एक दिन एक गरीब ब्राह्मण दरबार में आया। उसके साथ उसके दो अंधे बेटे थे। आदरपूर्वक राजा को नमन करके ब्राह्मण ने कहा, "महाराज, मैं बहुत गरीब हूं। अपने बच्चों को भोजन भी नहीं दे पाता हूं। यदि यही स्थिति रही तो ये अधिक दिन जीवित नहीं रह पाएंगे। मैं व्यापार शुरू करना चाहता हूं। मुझे दस सोने की अशर्फी देने की कृपा करें।"

राजा को ब्राह्मण तथा उसके पुत्रों पर बहुत दया आई। उन्होंने अपने कोषागार से दस अशर्फी ब्राह्मण को दिलवाकर पूछा, "तुम इन्हें वापस कब तक करोगे?" ब्राह्मण ने कहा, "महाराज, मैं एक साल के अंदर जरूर यह उधार चुकता कर दूंगा।"

सशंकित राजा ने कहा, "और अगर पैसे लेकर तुम गायब हो गए तो?" ब्राह्मण ने कहा, "महाराज, आप चाहें तो मेरे बेटों को अपने पास पैसे लौटाने तक रख सकते हैं।"

राजा हैरान था। भला दो अंधे लड़के उसके किस काम के? राजा को हैरान देखकर ब्राह्मण ने कहा, "मेरे पुत्रों में विशेष गुण है। बड़ा पुत्र किसी भी घोड़े को छूकर और सूंघकर उस घोड़े की जाति और स्वभाव बता सकता है। छोटा पुत्र किसी पत्थर को हाथ में लेकर उसकी परख कर सकता है।" ब्राह्मण की बात सुनकर राजा ने प्रसन्नतापूर्वक दोनों को अपने महल में ब्राह्मण के उधार चुकता करने तक रख लिया।

एक दिन एक व्यापारी राजा के पास एक बहुत अच्छी नस्ल का घोड़ा लेकर आया। वह देखने में स्वस्थ और तगड़ा था। राजा को घोड़ा बहुत पसंद आया। सौदा पक्का होने वाला ही था कि राजा को अचानक ब्राह्मण पुत्र का ख्याल आया। उसे बुलवाया गया। उसने घोड़े को छूकर और सूंघकर बताया कि यह बहुत ही भड़कने वाला घोड़ा है। राजा ने इस पर सत्यता की जांच के लिए घुड़सवार को भेजा। घुड़सवार अनेक प्रयत्नों के बाद भी घोड़े पर

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

बैठने में सफल नहीं हो पाया और घोड़े ने उसे गिरा दिया। ब्राह्मण पुत्र से प्रसन्न होकर राजा ने उसे पारितोषिक दिया।

कुछ दिनों के बाद राजा को रत्न खरीदने की इच्छा हुई। जौहरी ने उन्हें कीमती रत्न दिखाए। राजा ने एक बड़ा सा हीरा पसंद किया। उन्होंने उसे खरीदने से पहले ब्राह्मण के छोटे पुत्र को बुलवाया। ब्राह्मण पुत्र ने हीरा हाथ में लेकर कहा, “महाराज, यह श्रापित हीरा है। इसे पहनने वाले को अपनी जान से हाथ धोना पड़ेगा।”

इस बात की सत्यता जानने की इच्छा से उन्होंने जौहरी की ओर नजर डाली। जौहरी ने इस बात की सत्यता को स्वीकार करते हुए कहा, “इनकी बात सही है। इससे पहले इसे तीन लोगों ने लिया था और उनकी मौत आश्चर्यजनक ढंग से अचानक ही हो गई।” यह सुनकर राजा ने हीरे की जगह एक बड़ा रूबी खरीदकर ब्राह्मण पुत्र को इनाम दिया।

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

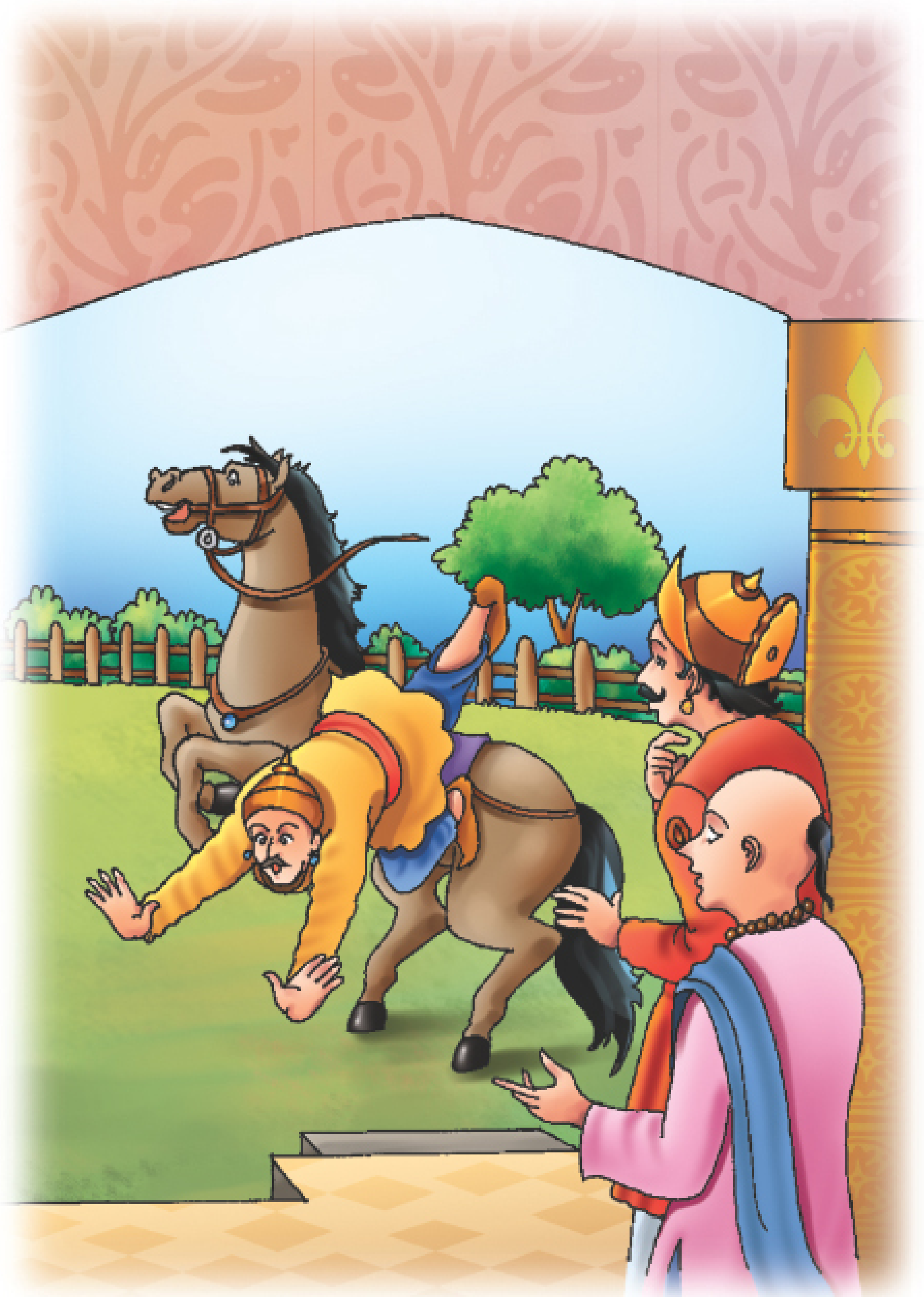

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

साल पूरा होते-होते ब्राह्मण अशर्फियां लौटाने राजा के पास आया। उसका व्यापार अच्छा चल निकला था। राजा ने ब्राह्मण से पूछा कि पुत्रों की तरह क्या उसमें भी कोई विशेष गुण है? ब्राह्मण ने बताया कि वह किसी का हाथ देखकर उसका बीता हुआ कल बता सकता है। राजा ने ब्राह्मण से अपना हाथ देखने के लिए कहा।

राजा का हाथ देखकर ब्राह्मण ने कहा, “महाराज, इस बड़े राज्य के आप एक होनहार शासक हैं, पर आपके पिता जी एक चोर थे, जिन्होंने कई शहरों को लूटा था।”

ब्राह्मण की बात सुनते ही राजा आगबबूला हो गया।

“झूठे, तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई मेरे बारे में मेरे ही दरबार में, ऐसी बात कहने की?” अपने सेवकों को राजा ने ब्राह्मण और उसके पुत्रों को पकड़कर उनका सिर कलम करने की आज्ञा दी।

इतना कहकर बेताल ने पूछा, “राजन! मुझे बताइये, आपके विचार में उन लोगों की मृत्यु का उत्तरदायी कौन है?”

विक्रमादित्य ने उत्तर दिया, “अपने और अपने पुत्र की मृत्यु का उत्तरदायी खुद ब्राह्मण था। हालांकि उसने सच कहा था पर कड़वे सच को कहने से पहले उसे बुद्धिमानी से काम लेना चाहिए था। राजा को पता था कि वह एक चोर की संतान है पर सबके सामने इस बात का कहा जाना राजा के प्रभुत्व के लिए हानिकारक और अपमानजनक बात थी। इस बात के लिए ब्राह्मण को मौत की सजा तो होनी ही थी।”

बेताल की हंसी से जंगल गूंज उठा। “मैं आपके निर्णय से प्रभावित हुआ राजन!” यह कहकर बेताल वापस पेड़ पर चला गया।

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

INDIAN BEST TELEGRAM E-BOOKS CHANNEL

(*Click Here To Join*)

साहित्य उपन्यास संग्रह

Click Here

Indian Study Material

Click Here

Audio Books Museum

Click Here

Indian Comics Museum

Click Here

Global Comics Museum

Click Here

Global E-Books Magazines

Click Here

उग्रसील और राजा वृशभानु

बेताल पेड़ की शाखा से प्रसन्नतापूर्वक लटका हुआ था, तभी विक्रमादित्य ने फिर वहां पहूंचकर, उसे पेड़ से उतारा और अपने कंधे पर डालकर चल दिए। बेताल ने फिर अपनी कहानी सुनानी शुरू कर दी।

बहुत पुरानी बात है। मधुपुरा राज्य में वृशभानु नामक एक दयालु राजा राज्य करता था। वह बहुत ही बुद्धिमान शासक था। उसकी प्रजा शांतिपूर्वक रहती थी। राज्य के ठीक बाहर एक घना जंगल था। उस जंगल में डाकुओं का एक दल रहता था, जिसका नेता उग्रसील था। यह दल जंगल के आस-पास के गांवों में जाकर लूट-पाट और मार-काट करता था। मधुपुरा के लोग हमेशा भयभीत रहते थे। राजा की ओर से डाकुओं को पकड़ने की सारी कोशिशें बेकार हो गई थीं। डाकु हमेशा अपना मुंह अपनी पगड़ी के छोर से ढंके रखते थे जिससे कभी उन्हें कोई पहचान ही नहीं पाता था।

इसी प्रकार कई साल बीत गए। उग्रसील ने एक सुंदर और दयालु महिला से प्रेम विवाह कर लिया। वह उग्रसील का साथ उसके दुष्कर्मों में नहीं देती थी। वह अक्सर उसे सुधारने की कोशिश करती रहती थी, पर उग्रसील उसकी बात नहीं सुनता था।

कुछ दिनों के बाद उग्रसील को एक पुत्र की प्राप्ति हुई, जिससे उसके जीवन की धारा बदलने लगी। वह विनम्र और दयालु बनने लगा। पुत्र प्रेम के कारण डाका डालने के बाद उसने औरतों और बच्चों को मारना बंद कर दिया।

एक दिन भोजन के बाद उग्रसील को आराम करते हुए नींद आ गई। उसने सपने में देखा कि राजा के सिपाहियों ने उसे पकड़ लिया है तथा उसकी पत्नी और बच्चे को नदी में डाल दिया है। वह भय से घबराकर उठ बैठा। पसीने से लथपथ.... उसी पल उग्रसील ने निर्णय लिया कि अब वह इस धंधे को छोड़कर ईमानदारी का जीवन बितायेगा। उसने अपने दल के लोगों को बुलाकर अपनी इच्छा बताई।

एक स्वर में दल के लोगों ने कहा, "सरदार, आप ऐसा नहीं कर सकते। आप के बिना हम लोग क्या करेंगे?" उग्रसील के इस विचार से सभी असंतुष्ट हो गए और उग्रसील को मारने का विचार करने लगे।

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

अपने और अपने परिवार की जीवन रक्षा के लिए उग्रसील उसी रात जंगल से भागकर राजमहल जा पहुंचा। अपनी पत्नी और बच्चे को बाहर छोड़कर, दीवार चढ़कर खिड़की के रास्ते वह राजा के आरामगृह में पहुंचा और राजा के पैरों पर गिरकर माफी मांगने लगा। राजा हड़बड़ा कर उठे और चिल्लाए, "सिपाहियों! चोर-चोर...." सिपाहियों ने तुरंत आकर उग्रसील को पकड़ लिया। उग्रसील हाथ जोड़कर विनम्र स्वर में बोला-महाराज, मैं चोर नहीं हूं। मैं अपनी गलतियों को सुधारने तथा आपसे क्षमा याचना करने आया हूं। मेरी पत्नी और मेरा पुत्र साथ में है, मेरे पास उन्हें रखने के लिए कोई जगह नहीं है। मैं आपको सब सच-सच बता दूंगा।"

उग्रसील की आंखों में आंसू तथा बातों में सच्चाई देखकर राजा ने उसे छोड़ने दी आज्ञा दे दी। उससे पूरी बात सुनकर राजा ने अशर्फियों से भरा एक छोटा थैला उसे दिया और कहा, "यह लो, अब इससे तुम ईमानदारी का जीवनयापन शुरू करो। तुम आजाद हो और जहां चाहो जा सकते हो। प्रतिज्ञा करो कि एक साल के बाद तुम आओगे और मुझे बताओगे कि तुमने गलत रास्ते पर चलना छोड़ दिया है।"

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

उग्रसील की प्रसन्नता का ठिकाना ही नहीं था। उसने नम आंखों से राजा के पैर छूकर थैली ले ली और उसी रात अपने परिवार के साथ शहर छोड़कर कहीं और चला गया।

बेताल ने राजा विक्रमादित्य से पूछा, "राजन! तुम्हें क्या लगता है... क्या राजा ने उस क्रूर डाकू को क्षमा करके सही किया?"

विक्रमादित्य ने जवाब दिया, "राजा वृशभानु का उदारतापूर्ण व्यवहार उनकी दयालुता और बुद्धिमानी का बहुत अच्छा उदाहरण है। सजा का मुख्य उद्देश्य दोषी को उसकी गलती का अहसास कराना होता है। क्योंकि उग्रसील को अपनी गलती का एहसास हो चुका था, इसलिए राजा दूारा क्षमादान उचित था। ऐसा करके उन्होंने एक उदाहरण प्रस्तुत किया। संभव है यह दृष्टांत सुनकर दूसरे डाकू भी समर्पण के लिए खुद ही तैयार हो जाएं।"

विक्रमादित्य के उत्तर से संतुष्ट बेताल तुरंत उड़कर पेड़ पर चला गया और राजा बेताल को लेने फिर से पेड़ की ओर चल दिए।

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

ईर्ष्या का फल

बेताल ने विक्रमादित्य को नई कहानी सुनानी शुरू कर दी।

चित्रकूट में राजा उग्रसेन का शासन था। उनके पास एक चतुर तोता था। राजा ने तोते से पूछा, "मित्र, तुम्हारी नजर में मेरे लिए उपयुक्त वधू कौन होगी?"

तोते ने उत्तर दिया, वैशाली की राजकुमारी आपके लिए उपयुक्त वधू होगी। उसका नाम माधवी है। वह वहां की सभी कन्याओं में सबसे सुंदर है।"

राजा ने तुरंत वैशाली के राजा को विवाह का प्रस्ताव भिजवाया, जिसे राजा ने सहर्ष स्वीकार कर लिया। धूमधाम से दोनों का विवाह हुआ और वे सुखपूर्वक रहने लगे।

राजकुमारी माधवी के पास भी मैना थी। माधवी और उग्रसेन के विवाह के बाद वह मैना भी चित्रकूट आ गई और तोता-मैना की दोस्ती हो गई। एक दिन मैना ने तोते को एक अजीब औरत की कहानी सुनाई।

किसी समय की बात है, एक धनी व्यापारी था। उसकी चंचला नामक एक पुत्री थी। चंचला सुंदर तथा बुद्धिमान होने के साथ-साथ अपने नाम के अनुरूप चंचल मन की थी। उसके पिता ने उसके स्वभाव को बदलने की बहुत कोशिश की पर असफल रहे। उन्होंने एक सुंदर वर ढूंढकर उसका विवाह कर दिया। वह पिता का घर छोड़कर पति के घर आ गई।

चचंला का पति एक व्यापारी था। व्यापार के सिलसिले में वह अधिकतर बाहर ही रहा करता था। एक दिन चचंला का हाल जानने की इच्छा से उसके पिता ने एक दूत चचंला के घर भेजा। जब वह दूत आया, तब चचंला का पति घर में नहीं था। चचंला ने दूत का स्वागत सत्कार किया। उसे भोजन कराया। वह दूत छैल-छबीला बांका यवुक था। दोनों एक दूसरे को पसदं आ गए और उनमें प्रेम सम्बधं स्थापित हो गया।

समय बीतने के साथ प्रेम भी गहरा होता गया और जिसके परिणामस्वरूप दूत को चचंला के पति से ईर्ष्या होने लगी। चचंला मन ही मन भयभीत रहने लगी कि कहीं इस सब का पता उसके पति को न चल जाए। उसने एक योजना बनाई।

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

चंचला ने शर्बत में जहर मिलाकर अपने प्रेमी को पिला दिया। बिना किसी शंका के उसने शर्बत पी लिया और तुरंत उसकी मृत्यु हो गई। चंचला ने उसके मृत शरीर को घसीटकर एक अंधेरे कोने में छुपा दिया।

पति घर लौटा पर उसे कुछ भी आभास नहीं हुआ। भोजन करते समय चंचला चिल्लाई, "मदद, मदद, हत्या, हत्या... अड़ोसी-पड़ोसी शोर सुनकर उसके घर इकट्ठे हो गए। उन्होंने मृत दूत को देखा और सिपाहियों को खबर कर दी। उसके पति की पेशी राजा के सामने हुई।"

उस राज्य में हत्या के लिए मृत्युदंड ही मिलता था। जब चंचला के पति को फांसी के लिए ले जाया जा रहा था तभी एक चोर वहां आया और राजा का अभिवादन कर बोला, "महाराज, मैं एक चोर हूं। जिस रात हत्या हुई, मैं चोरी के इरादे से मौके के इंतजार में अंदर छिपा बैठा था। मैंने देखा कि इस व्यक्ति की पत्नी ने शर्बत में जहर मिलाकर इसे पिलाया, जिससे इसकी तुरंत मृत्यु हो गई। कृपया आप इस निर्दोष व्यक्ति को छोड़ दें।"

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

राजा ने निर्दोष पति को छोड़कर चंचला को मृत्युदंड दे दिया। बेताल ने पल भर रुककर राजा से पूछा, "राजन! आपके विचार में इस दुर्भाग्य का दायित्व किस पर है?"

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

विक्रमादित्य ने उत्तर दिया, "चंचला के पिता ही इस दुर्भाग्य के जिम्मेदार हैं। यदि उन्होंने चंचला के पति को चंचला की आदतों के बारे में बताया होता तो वह सावधान रहता और अपनी पत्नी को ऐसे अकेले नहीं छोड़ता।"

राजा के सत्य वचन सुनकर बेताल मुस्कराया। उसने कहा, "अच्छा, मैं फिर चला..." यह कहता हुआ वह उड़कर पीपल के पेड़ पर चला गया।

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

ब्राह्मण का पुत्र

बेताल पेड़ की शाखा से प्रसन्नतापूर्वक लटका हुआ था, तभी विक्रमादित्य ने फिर वहां पहुंचकर, उसे पेड़ से उतारा और अपने कंधे पर डालकर चल दिए। बेताल ने नई कहानी सुनानी शुरू कर दी।

उदयपुर में एक बहुत ही धर्मिक ब्राह्मण रहता था। ब्राह्मण और उसकी पत्नी के पास ईश्वर का दिया सब कुछ था। वे ईमानदारी के साथ जीवन जी रहे थे। वे निःसंतान थे। पुत्र प्राप्ति के लिए वे हमेशा ईश्वर से प्रार्थना किया करते थे।

ईश्वर ने उनकी प्रार्थना सुनी और ब्राह्मणी ने पुत्र को जन्म दिया। ब्राह्मण दंपत्ति की खुशी का ठिकाना नहीं था। उन्होंने गरीबों को भोजन कराया तथा ईश्वर का धन्यवाद किया।

ब्राह्मण दंपत्ति अपने पुत्र को सर्वगुण सम्पन्न देखना चाहते थे। उन्होंने उसे प्रेम और दयालुता का पाठ पढ़ाया तथा सर्वश्रेष्ठ शिक्षा दी। बालक बड़ा होकर युवक बन गया।

शहर में सभी लोग उस युवक की बुद्धि और ज्ञान की चर्चा करते थे। ब्राह्मण दंपत्ति ने उसके विवाह की इच्छा से योग्य कन्या ढूंढनी शुरू कर दी। पर एक दिन उनका पुत्र बीमार हो गया। शहर के सर्वश्रेष्ठ चिकित्सक की चिकित्सा तथा ईश्वर की प्रार्थना सब बेकार गई। एक माह के बाद युवक की मृत्यु हो गई। माता-पिता अंतिम संस्कार के लिए मृत शरीर को लेकर गए। उनका करुण विलाप सुनकर वृक्ष के नीचे बैठा ध्यानमग्न साधु उठकर पास आया। उसने मृत युवक तथा करुण विलाप करते माता-पिता को देखा। उसके मन में एक विचार आया। “मैं अपना पुराना शरीर त्यागकर इस युवक के शरीर में प्रवेश कर सकता हूं।” ऐसा सोचकर साधु बैठकर पहले थोड़ी देर रोया, फिर हंसा और फिर उसने ध्यानमग्न अवस्था में आंखें बंद कर लीं।

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

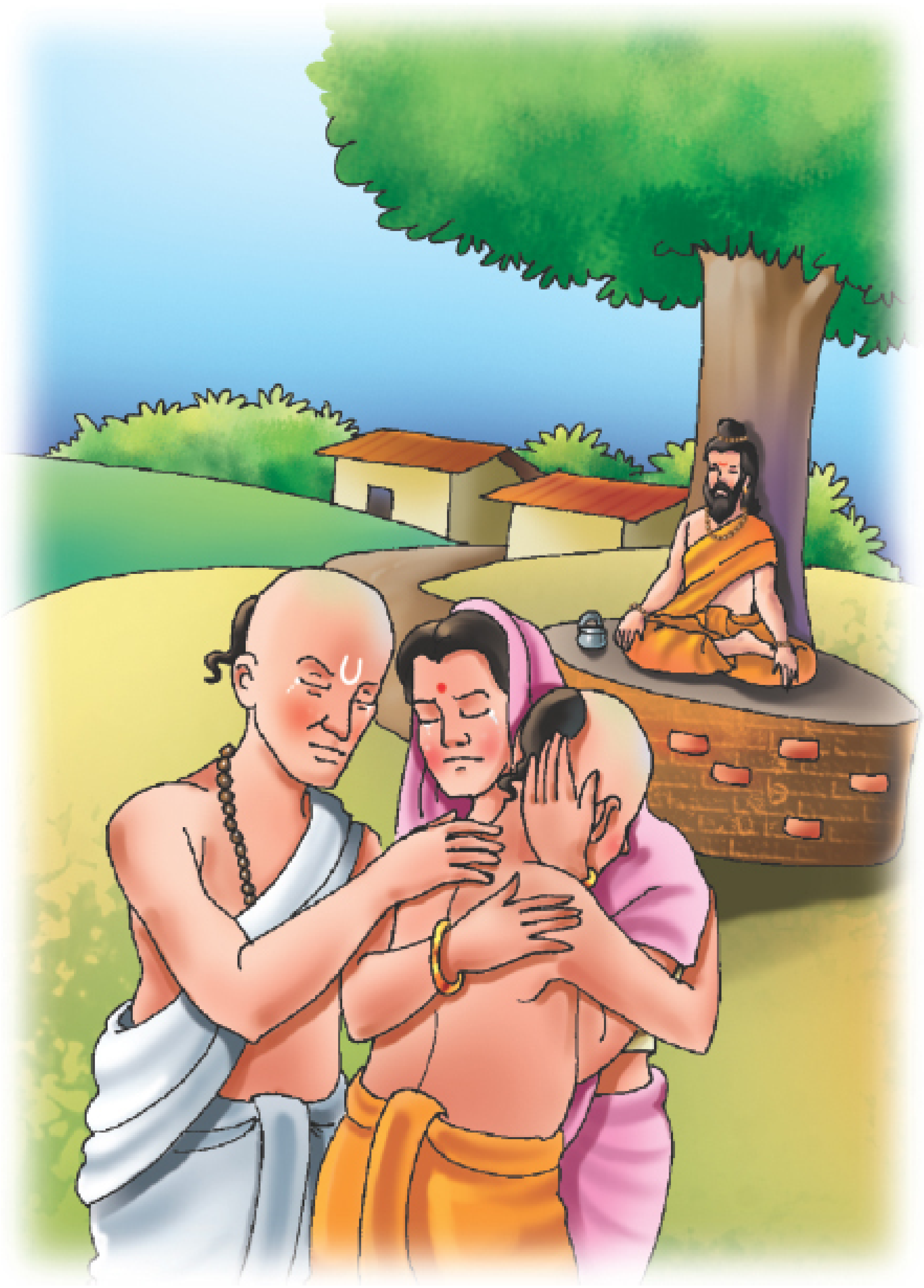

उसी समय युवक ने अपनी आंखें खोल दीं। आश्चर्यचकित ब्राह्मण दंपत्ति अपने पुत्र को सीने से लगाकर रोने लगे।

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

बेताल ने राजा से पूछा,”क्या आप बता सकते हैं साधु पहले रोया, फिर हंसा। ऐसा क्यों?” राजा विक्रमादित्य ने कहा, “शरीर छोड़ने के कारण दु:खी साधु पहले रोया और फिर पुराने शरीर को छोड़ नए मजबूत शरीर में प्रवेश करने की प्रसन्नता में हंसा।”

विक्रमादित्य के उत्तर से प्रसन्न बेताल राजा को छोड़कर फिर से उड़कर पीपल के पेड़ पर चला गया।

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

दो पिता की कहानी

तांत्रिक को दिए हुए वचन को निभाने के लिए राजा विक्रमादित्य ने फिर से पेड़ पर चढ़कर बेताल को उतारकर कंधे पर डाल लिया और चलने लगे। बेताल ने उन्हें नई कहानी सुनानी शुरू कर दी।

बहुत पहले अवन्तीपुर में एक ब्राह्मण रहता था। प्रसव के समय, एक सुन्दर पुत्री को जन्म देकर, ब्राह्मण की पत्नी चल बसी। ब्राह्मण अपनी पुत्री से बहुत प्यार करता था। पुत्री को प्रसन्न रखने के लिए वह उसकी हर छोटी-बड़ी इच्छा पूरी करता था। इसके लिए उसे कड़ी मेहनत करनी पड़ती थी। धीरे-धीरे ब्राह्मण की पुत्री विशाखा बड़ी होकर एक सुंदर तथा होशियार युवती बन गई।

एक दिन विशाखा सोई हुई थी, तभी एक चोर खुली खिड़की से अंदर आया और परदे के पीछे छुप गया। विशाखा उसे देखकर डर गई और पूछा, तुम कौन हो?” उसने कहा, “मैं चोर हूं। राजा के सिपाही मेरे पीछे पड़े हुए हमैं। कृपया मेरी मदद कीजिए। मैं आपको कोई नुकसान नहीं पहुंचाऊंगा ।”

तभी राजा के सिपाहियों ने दरवाजे पर दस्तक दी। विशाखा ने उन्हें कुछ नहीं बताया और वे वापस चले गए। चोर बाहर निकला, विशाखा का धन्यवाद कर, जिस रास्ते आया था उसी रास्ते से चला गया।

विशाखा और उस चोर की मुलाकात अक्सर बाजार में होने लगी और धीरे-धीरे उनमें प्यार हो गया। एक चोर से विशाखा का विवाह करने के लिए उसके पिता कभी राजी नहीं होते, इसलिए दोनों ने चुपचाप विवाह कर लिया।

थोड़े दिनों तक सुखपूर्वक दिन बीत गए। एक दिन राजा के सिपाहियों ने चोर को पकड़ लिया और उसे एक अमीर के घर में डाका डालने के जुर्म में मृत्युदंड मिला। गर्भवती विशाखा विक्षिप्त होकर रोने लगी। चोर की मृत्यु के बाद विशाखा के पिता ने समझा-बुझाकर उसका विवाह एक दूसरे व्यक्ति से कर दिया। कुछ माह के बाद उसने एक पुत्र को जन्म दिया जिसे उसके पति ने अपने बच्चे के रूप में स्वीकार किया।

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

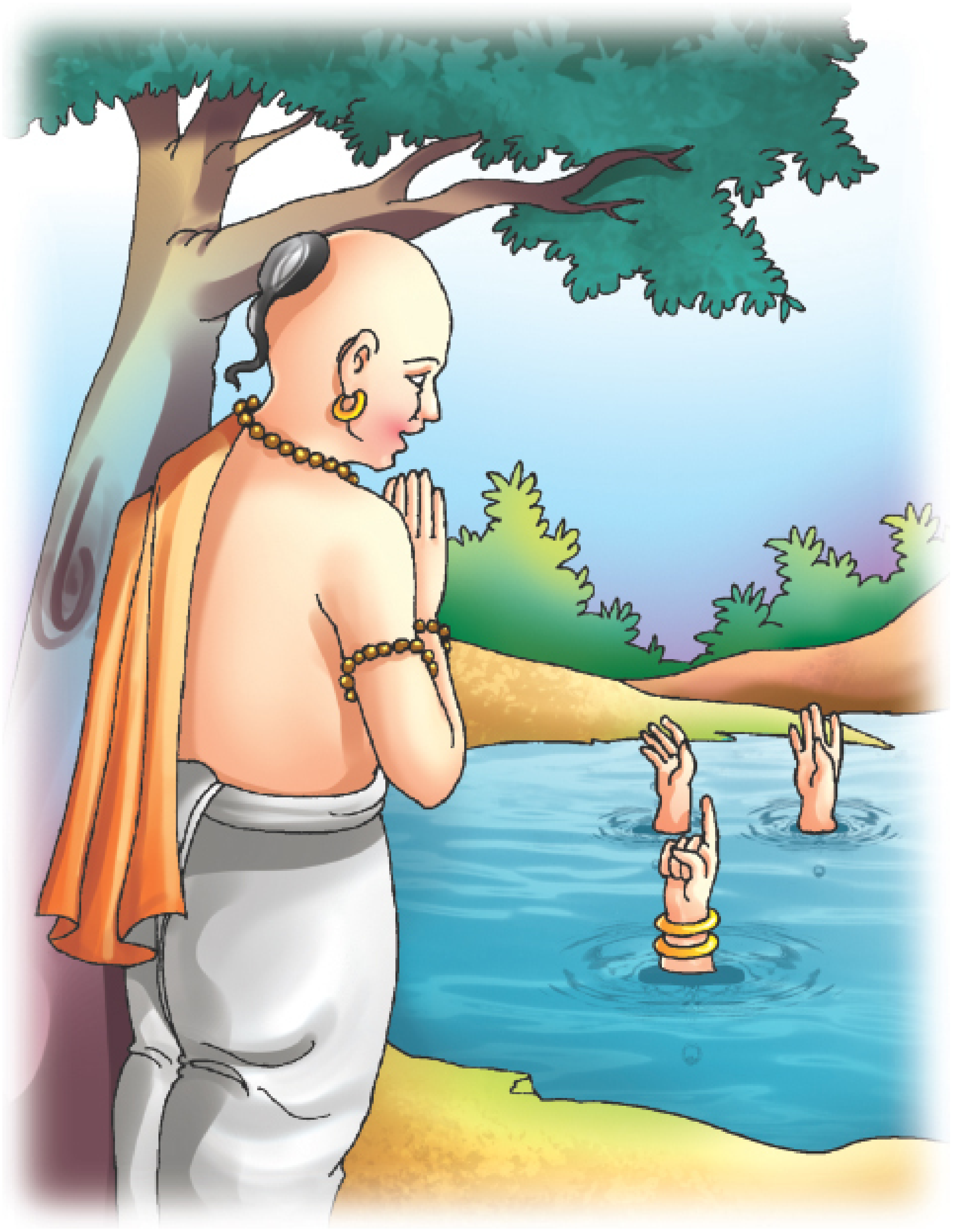

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

उनका जीवन सुखपूर्वक चल रहा था, पर दुर्भाग्यवश पांच साल के बाद विशाखा की मृत्यु हो गई। पिता ने पुत्र का लालन-पालन बहुत लाड़-प्यार से किया। पिता-पुत्र में बहुत प्रेम था। धीरे-धीरे बच्चा बड़ा होकर दयालु और सहृदय युवक बन गया। अचानक एक दिन उसके पिता की भी मृत्यु हो गई।

दु:खी पुत्र अपने माता-पिता की शांति की प्रार्थना करने नदी के किनारे गया। पानी में जाकर जल अंजुली में भरकर जब उसने प्रार्थना की तो तीन हाथ जल से बाहर निकले। एक चूड़ियों वाले हाथ ने कहा, "पुत्र, मैं तुम्हारी मां हूं।" युवक ने मां को तर्पण दिया। दूसरे हाथ ने कहा, "मैं तुम्हारा पिता हूं।" तीसरा हाथ शांत रहा। आप कौन हैं, पूछने पर उसने कहा, "पुत्र मैं भी तुम्हारा पिता हूं। मैंने ही तुम्हें लाड़-प्यार से पाल-पोसकर बड़ा किया है।"

बेताल ने राजा से पूछा, "राजन! दोनों में से किस पिता के लिए पुत्र को तर्पण करना चाहिए?" विक्रमादित्य ने कहा, "जिसने उसका लालन-पालन और किया । पिता के सभी कार्यों का पालन उसी ने किया है। मां की मृत्यु के बाद यदि बच्चे का ख्याल पिता ने नहीं रखा होता, तो शायद उसकी भी मृत्यु हो जाती। वही उस युवक का पिता कहलाने का अधिकारी है।"

बेताल ने ठंडी आह भरी। फिर से विक्रमादित्य ने सही उत्तर दिया था। बेताल विक्रमादित्य के कंधे से उड़ा और वापस पेड़ पर चला गया।

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

जब सपना सच हुआ

विक्रमादित्य ने फिर पेड़ पर चढ़कर बेताल को उतारा और अपने कंधे पर डालकर चलना शुरू कर दिया। बेताल ने फिर से कहानी सुनानी शुरू कर दी।

किसी समय पाटलिपुत्र में सत्यपाल नामक एक धनी व्यापारी रहता था। सत्यपाल के साथ ही चंद्रनाथ नामक बालक रहता था। वह सत्यपाल का दूर का रिश्तेदार था, जो बचपन में ही अनाथ हो गया था।

चंद्रनाथ के साथ सत्यपाल नौकरों जैसा व्यवहार करता था, जिससे चंद्रनाथ को बहतु दुःख होता था। चंद्रनाथ सत्यपाल की तरह अमीर बनने का सपना देखने लगा।

एक दिन दोपहर में सोते समय उसने सपना देखा कि वह धनी व्यापारी बन गया है और सत्यपाल उसका नौकर। वह नींद में ही बड़बड़ाने लगा, "ओ मूर्ख सत्यपाल! इधर आओ और मेरे जूते उतारो..."

उधर से गुजरते हुए सत्यपाल ने चंद्रनाथ का बड़बड़ाना सुन लिया। क्रोधित होकर उसने चंद्रनाथ को जूता फेंककर मारा और अपने घर से बाहर निकाल दिया।

चंद्रनाथ के पास अब रहने का ठिकाना नहीं था। वह दिन भर सड़कों पर घूमता रहा। अपनी बेइज्जती वह बर्दाश्त नहीं कर पा रहा था। मन ही मन उसने बदला लेने का सोचा। चलते–चलते वह जंगल में जा पहुंचा। जंगल में एक साधु रहते थे। वह उनके पैरों में गिर गया।

साधु ने पूछा, "पुत्र, तुम इतने दुःखी क्यों हो?" चंद्रनाथ ने उन्हें अपनी आपबीती सुना दी। साधु ने कहानी सुनकर दयाभाव से कहा, "मैं तुम्हें एक मंत्र दूंगा। सपना देखने के बाद यदि तुम उस मंत्र को पढ़ोगे तो तुम्हारा सपना पूरा हो जाएगा। पर तुम इस मंत्र को बस तीन बार ही प्रयोग कर पाओगे।" ऐसा कहकर साधु ने उसे मंत्र सिखा दिया।

चंद्रनाथ को जैसे खजाना मिल गया था। प्रसन्न मन से वह वापस शहर आ गया। वह एक कुटिया के सामने सीढ़ियों पर लेट गया। लेटते ही आंख लग गई और उसने एक सपना देखा कि सत्यपाल उससे क्षमा याचना कर रहा है। वह अपने किए पर शर्मिन्दा है और

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

अपनी पुत्री सत्यवती के साथ उसका विवाह करना चाहता है। चंद्रनाथ सोकर उठा और सोचने लगा, “सपना तो बहुत अच्छा था। मंत्र को जांचने का यह अच्छा मौका है” और वह मंत्र पढ़ने लगा।

सत्यपाल चंद्रनाथ को ढूंढ रहा था। उसे कुटिया की सीढ़ियों पर बैठा देख वह आया और अपने किए के लिए उससे क्षमा मांगने लगा। फिर उसने अपनी पुत्री के विवाह का प्रस्ताव भी उसके सामने रखा। चंद्रनाथ को अपने कानों पर विश्वास ही नहीं हो रहा था। मंत्र ने काम कर दिखाया था और उसका सपना पूरा हो रहा था।

चंद्रनाथ ने प्रस्ताव को स्वीकार कर सत्यवती से विवाह कर लिया। सत्यपाल ने चंद्रनाथ को अलग से व्यापार करवा दिया, जिससे दोनों सुखपूर्वक रह सकें।

एक दिन फिर चंद्रनाथ ने सपना देखा कि उसका व्यापार खूब चल पड़ा है और वह शहर का सबसे धनी व्यापारी बन गया है। सपने से जगने पर उसने फिर से मंत्र पढ़ा। मंत्र के प्रभाव से जल्दी ही उसका व्यापार चल निकला और उसने खूब धन कमाया। सपने के अनुसार वह शहर का सबसे धनी व्यापारी बन गया।

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

शहर के अन्य व्यापारी उससे ईर्ष्या करने लगे। चारों ओर चंद्रनाथ के व्यापार की बातें होने लगीं कि कैसे धनी बनने के लिए उसने कर की अवहेलना की है। ये सारी अफवाहें धीरे–धीरे राजा के कानों में भी पहुंची। राजा ने अपने सिपाहियों से इन अफवाहों की जांच करवाई तो उन्हें सच पाया। चंद्रनाथ को सजा स्वरूप जितने कर की अवहेलना की गई थी, उसका दस गुना राजा को देना था।

इन सभी बातों से चंद्रनाथ क्रोधित हो उठा। उसी रात उसने सपना देखा कि वह पाटलिपुत्र का राजा बन गया है और उसके बारे में जिन व्यापारियों ने अफवाहें उड़ाई थीं, उन सबको वह सजा दे रहा है। सुबह उठने पर वह जैसे ही अंतिम बार मंत्र पढ़ने जा रहा था, उसे कुछ आभास हुआ।

चंद्रनाथ रोने लगा। उसने मंत्र नहीं पढ़ा और सीधा जंगल में साधु के पास जाकर उनसे मंत्र की शक्ति वापस लेने का अनुरोध् किया। साधु उसकी बात सुनकर मुस्करा उठे।

बेताल ने राजा विक्रमादित्य से पूछा, फ“राजन, चंद्रनाथ ने मंत्र क्यों नहीं पढ़ा और पाटलिपुत्र का राजा क्यों नहीं बना?”

विक्रमादित्य ने उत्तर दिया, “चंद्रकांत को यह आभास हो गया था कि कड़ी मेहनत के बिना प्रसिद्धि और सफलता नहीं मिलती है। ऐसा जीवन जीने में कोई मजा नहीं है, जहां सारे सपने आसानी से साकार हों। उसे साधु ने मंत्र की शक्ति के द्धारा बहुत ही मूल्यवान सीख दी थी।”

“राजन! तुम महान हो। क्षमा करना, मुझे जाना पड़ेगा।” हंसता हुआ बेताल ऐसा कहकर वापस पेड़ पर चला गया।

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

उपयुक्त पात्र

राजा विक्रमादित्य फिर से पेड़ पर बेताल को लेने पहुंचे। उन्हें देखकर आश्चर्यचकित बेताल ने कहा, "राजन, बार–बार मुझे लेकर जाते हो, तुम ऊब गए होगे।" राजा ने कुछ भी नहीं कहा। उन्हें शांत देख उसने फिर कहा, "ठीक है, मैं तुम्हें दूसरी कहानी सुनाऊंगा। वह तुम्हे ऊबने नहीं देगी" और बेताल ने दूसरी कहानी सुनानी शुरू की।

कन्नौज में कभी एक बहुत ही धार्मिक ब्राह्मण रहता था। विद्रुमा नामक उसकी एक जवान पुत्री थी जो बहुत अधिक सुंदर थी। उसका चेहरा चांद की तरह था और रंग पिघले हुए सोने की तरह था।

उसी शहर में तीन विद्धान ब्राह्मण युवक रहते थे। वे तीनों विद्रुमा को बहुत पसंद करते थे और उससे विवाह करना चाहते थे। उन्होंने कई बार विवाह का प्रस्ताव भी रखा था पर हर बार ब्राह्मण ने प्रस्ताव ठुकरा दिया था।

एक दिन दुर्भाग्यवश विद्रुमा बीमार पड़ गई। बूढे ब्राह्मण ने उसे बचाने की हर संभव कोशिश की पर वह ठीक नहीं हो पाई और परलोक सिधार गई। तीनों ब्राह्मण युवक बहुत दुखी होकर, कई दिनों तक विलाप करते रहे और उन्होंने शेष जीवन विद्रुमा की याद में व्यतीत करने का निश्चय किया।

पहला ब्राह्मण युवक उसकी समाधि के पास कुटिया बनाकर रहने लगा और उसकी भस्म को अपना बिस्तर बना लिया। वह दिनभर भिक्षा मांगता और रात में उसी बिस्तर पर सोता था।

दूसरे ब्राह्मण युवक ने विद्रुमा की हड्डियां इकट्ठी करके गंगाजल में डुबोई और नदी के किनारे तारों की छांव में सोने लगा।

तीसरे ब्राह्मण युवक ने सन्यासी का जीवन व्यतीत करना शुरू किया। वह गांव–गांव भिक्षा मांगकर अपना जीवन व्यतीत करने लगा। एक दिन इसी प्रकार जब वह किसी गांव में घूम रहा था तो एक व्यापारी ने उससे अपने घर में रात व्यतीत करने का अनुरोध् किया।

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

व्यापारी का निमंत्रण स्वीकार करके वह उसके घर चला गया। रात में सभी भोजन करने बैठे। व्यापारी का छोटा बच्चा जोर से रोने लगा । उसकी मां ने उसे शांत करने की बहुत कोशिश की पर सब व्यर्थ रहा। थक हारकर परेशान औरत ने बच्चे को उठाकर चूल्हे में झोंक दिया। बच्चा तुरंत भस्म हो गया।

ब्राह्मण युवक यह सब देखकर भयभीत हो गया। गुस्से से कांपता हुआ वह अपने भोजन की थाली छोड़कर उठा और बोला, "तुम लोग बहुत ही क्रूर हो। एक भोले–भाले बच्चे को मार डाला। यह एक पाप है। मैं तुम्हारे यहां भोजन ग्रहण नहीं कर सकता।"

मेजबान प्रार्थना करता हुआ बोला, "कृपया आप मुझे क्षमा करें। आप यहां रुककर देखें कि कोई क्रूरता नहीं हुई है। मेरा बच्चा पूरी तरह सुरक्षित है। मैं उसे वापस जीवन दान दे सकता हूं।" यह कहकर उसने प्रार्थना की एक छोटी सी किताब निकाली और कुछ मंत्र पढ़ने लगा। बच्चा भस्म से पुनः जीवित हो गया। आश्चर्यचकित ब्राह्मण को अपनी आंखों पर विश्वास ही नहीं हो रहा था। अचानक उसे एक विचार आया। मेजबान के सो जाने पर ब्राह्मण युवक ने वह मंत्र वाली किताब उठाई और गांव छोड़कर वापस अपनी जगह आ गया।

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

अब वह विद्रुमा को जीवित करना चाहता था। उसे विद्रुमा की भस्म और हड्डियां चाहिए थीं। वह दोनों ब्राह्मण युवक के पास गया और बोला, “भाइयों, हम लोग विद्रुमा को जीवित कर सकते हैं, पर उसके लिए मुझे उसकी भस्म और हड्डियां चाहिए।” दोनों ब्राह्मण युवक यह सुनकर बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने हड्डियां और भस्म लाकर उसे दे दीं। तीसरे ब्राह्मण युवक ने जैसे ही मंत्र पढ़ा विद्रुमा भस्म से निकलकर खड़ी हो गई। वह और भी खूबसूरत लग रही थी। तीनों ब्राह्मण युवक उसे देख बहुत प्रसन्न हुए। अब उन्होंने आपस में उससे विवाह करने के लिए लड़ना शुरू कर दिया।

बेताल रुका और राजा से पूछा, “राजन, तीनों में कौन उसका पति बनने के लिए उपयुक्त है?” राजा विक्रमादित्य ने कहा, “पहला ब्राह्मण युवक” बेताल मुस्कराया। राजा ने फिर कहा, “तीसरे ब्राह्मण युवक ने मंत्र से उसे जीवन दिया, यह उसने पिता का काम किया। दूसरे ब्राह्मण यवक ने उसकी हड्डियां रखी थीं, जो कि एक पुत्र का काम था। पहला ब्राह्मण युवक उसकी भस्म के साथ सोया जो एक प्रेमी ही कर सकता है इसलिए वही विवाह के योग्य है।”

“तुम सही हो।” बेताल यह कहकर फिर उड़कर पीपल के पेड़ पर चला गया।

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

ब्राह्मण और बाज

बेताल पेड़ की शाखा से प्रसन्नतापूर्वक लटका हुआ था, तभी विक्रमादित्य ने फिर वहां पहुंचकर, उसे पेड़ से उतारा और अपने कंधे पर डालकर चल दिए। बेताल ने भी अपनी अगली कहानी शुरू कर दी।

बहुत साल पहले बनारस में धर्मस्वामी नामक एक धार्मिक ब्राह्मण रहता था। हरिस्वामी नामक उसका एक पुत्र था। वह अपनी पत्नी को बहुत प्यार करता था। उसकी पत्नी 'सुन्दरी' सच में बहुत सुन्दर थी। शायद ईश्वर ने फुर्सत में उसे बनाया था और अपनी सारी सुंदरता और आकर्षण उसे दे दिया था।

एक दिन चांदनी रात में जब हरिस्वामी बगीचे में अपनी पत्नी के साथ सोया हुआ था, तभी एक परी राजकुमार उधर से उड़ता जा रहा था। चांदनी से नहाई सुंदरी और भी सुंदर लग रही थी। उसे देखकर परी राजकुमार ने सोचा, "ऐसी सुंदरी यहां क्या कर रही है? इसे तो मेरे संसार में रहना चाहिए था।" ऐसा सोचकर वह सोई हुई सुंदरी को अपनी बांहों में उठाकर चला गया।

जगने पर हरिस्वामी अपनी पत्नी को नहीं पाकर परेशान हो गया। काफी देर तक उसने वहीं प्रतीक्षा की, पर वह कहां से आती। अपनी पत्नी के वियोग में वह बहुत दुःखी रहने लगा। अपना घर अपनी जायदाद सब बेचकर उसने शहर के गरीबों को भोजन कराया और शहर छोड़कर निकल पड़ा।

एक दिन, किसी गांव से गुजरते समय उसने देखा कि एक दयालु ब्राह्मण और उसकी पत्नी गरीबों को भोजन करा रहे हैं। दुःखी हरिस्वामी भी उनके दरवाजे पर जाकर बैठ गया। ब्राह्मण की पत्नी ने उसे दुःखी और भूखा समझकर भोजन दिया। हरिस्वामी भूखा तो था ही, ब्राह्मण की पत्नी को आशीर्वाद देकर चावल का कटोरा, मक्खन, चीनी लेकर एक पेड़ के नीचे धूप में आराम करने के लिए आकर बैठ गया।

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

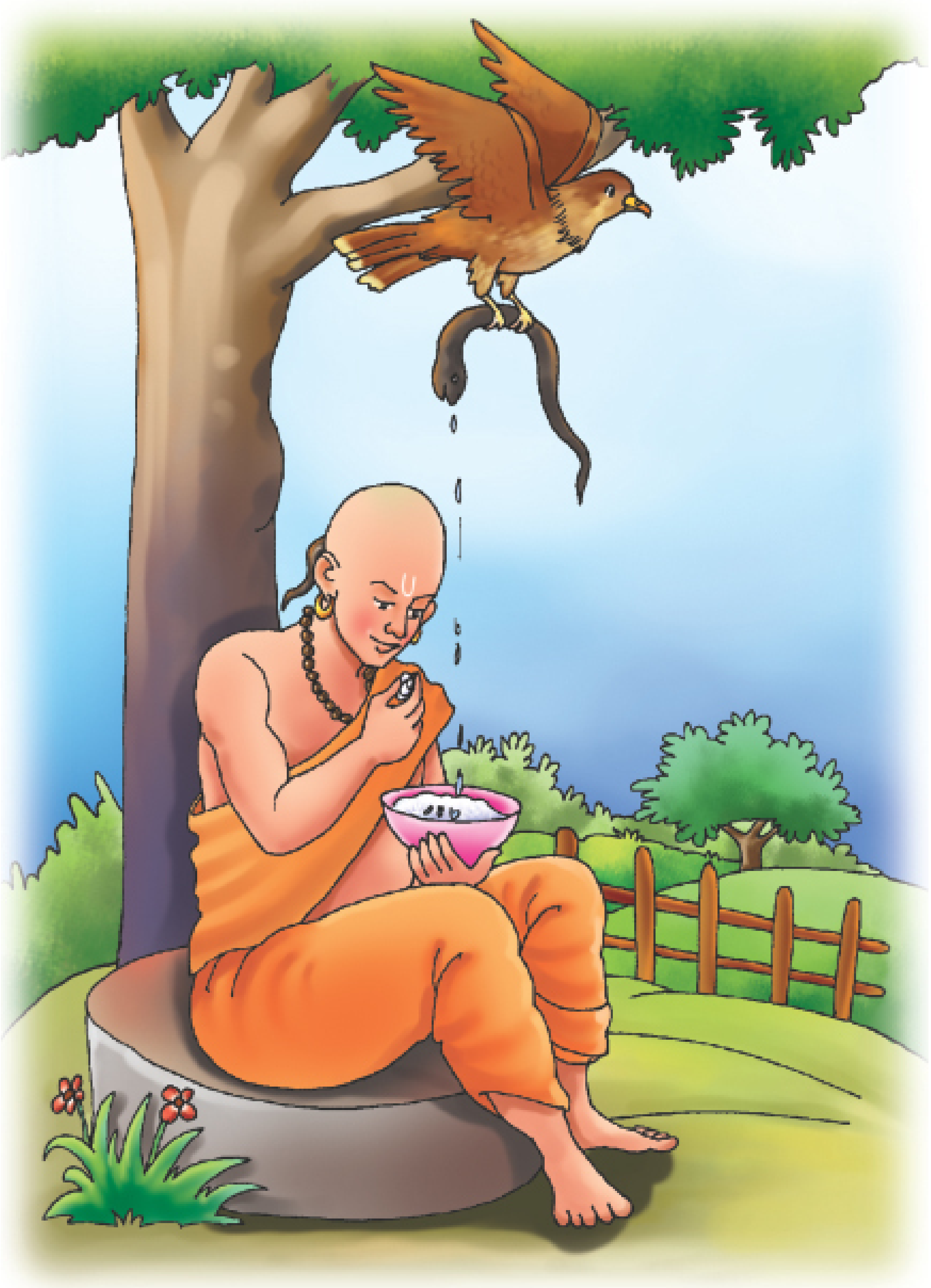

बसंत का मौसम बहुत ही सुहाना था। तभी एक बाज हरिस्वामी के सिर पर उड़ता हुआ आया। उसके मुंह में एक सांप था जिसके मुंह से जहर टपक रहा था। दुर्भाग्यवश जहर की

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

बूंदे चावल के कटोरे में भी गिर गयीं, जिसे हरिस्वामी ने नहीं देखा। परिणामस्वरूप चावल खाते ही उसकी आंखें उलट गईं, शरीर नीला हो गया, और तुरंत ही उसकी मृत्यु हो गई।

“राजन, अब आप मुझे बताएं कि हरिस्वामी की मृत्यु का उत्तरदायी कौन था.... बाज, सांप या ब्राह्मण की पत्नी जिसने कटोरे में चावल दिए थे?” बेताल में कहा।

राजा विक्रमादित्य मुस्कराए और बोले, “ब्राह्मण की पत्नी ने दुःखी यात्री को भोजन देकर अपना कर्म किया था। सांप बेचारा कुछ कर ही नहीं सकता था, क्योंकि वह मरा हुआ था। बाज सांप को खाना चाहता था, उसका भी कोई दोष नहीं था। यदि हरिस्वामी की मौत का उत्तरदायी किसी को ठहराना है तो वह खुद हरिस्वामी है। उसे ही अपने भोजन का ध्यान रखना चाहिए था।”

विक्रमादित्य का उत्तर समाप्त होते ही बेताल पेड़ की ओर फिर उड़कर चल दिया। उसे पता था कि राजा बुद्धिमान है और वह गलत उत्तर कभी नहीं देगा।

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

घमंडी विद्वान

जैसे ही बेताल को पेड़ से उतारकर विक्रमादित्य ने अपनी यात्रा शुरु की, बेताल ने अपनी कहानी शुरू कर दी। बेताल की कोशिश थी कि राजा हारकर उसे छोड़ दे, पर राजा विक्रमादित्य भी अपनी बात के पक्के थे। यह कहानी एक किसान के पुत्र की है जो बड़ा होकर महाकवि बना।

रामपुर में एक गरीब किसान के घर श्रीचरण का जन्म हुआ था। किसान पिता ने श्रीचरण को खेती के गुर सिखाने का हर संभव प्रयास किया पर उसका मन खेती की जगह दर्शन और कविता सीखने में था। श्रीचरण बहुत मेधावी था। दस वर्ष का ज्ञान उसने तीन वर्ष में ही सीख लिया। उच्च शिक्षा के लिए शिक्षक उसे शहर के बड़े विद्यालय में भेजना चाहते थे, पर श्रीचरण के पिता पैसे की कमी के कारण उसे आगे नहीं पढ़ा सके। श्रीचरण गांव में ही रहकर कविताएं और गाने लिखने लगा।

एक दिन एक प्रसिद्द कवि उसी गांव से गुजर रहे थे। मौके का लाभ उठाकर शिक्षक ने श्रीचरण की मुलाकात उस प्रसिद्द कवि से करवा दी। कवि ने श्रीचरण की प्रतिभा की बहुत तारीफ की और उसे पंडित महानंदा के पास जाकर कविता लिखने की कला सीखने की सलाह दी। पंडित महानंद के माध्यम से राजा के दरबार में पहुंचने की पूरी संभावना थी।

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

श्रीचरण यह सब जानकर बहुत प्रसन्न हुआ। उसे पता चला कि पंडित महानंद उसके गांव के धनी जमींदार किशनचंद के दूर के रिश्तेदार हैं। वह उनके पास गया और उनसे परिचय पत्र लिखने का अनुरोध किया। किशनचंद एक भले व्यक्ति थे और श्रीचरण की प्रतिभा का उन्हें पता भी था। फिर भी उन्होंने कहा, "क्षमा करना भई, पंडित महानंदा उसूल के बहुत पक्के हैं। यदि तुम परिचय पत्र लेकर जाओगे तो वे तुम्हें बिना मिले वापस भेज देंगे। इसलिए मेरी राय में तुम अपनी सर्वश्रेष्ठ कृतियों को लेकर जाओ और उन्हें प्रभावित करने को कोशिश करो। यदि वे प्रभावित हो गए तो तुम्हें अपना शिष्य जरूर बना लेंगे।"

श्रीचरण समझ गया कि पंडित महानंद को प्रभावित करना कोई आसान काम नहीं है। वह घर गया और पंडित जी को प्रभावित करने के लिए लिखने लगा। एक महीने तक लगातार मेहनत करने के बाद वह कृष्ण भगवान पर कविता लिखने में सफल हो गया। अपनी कविता का नाम रखा 'श्रीकृष्ण लीलामृत।'

एक शुभ दिन वह पंडित महानंद के घर के लिए निकल पड़ा। पंडित के घर पहुंचकर उसने देखा कि पंडित जी अपने घर की सीढ़ियों पर बैठे हैं। उनके हाथ में एक कागज है और एक शिष्य उनके पैर के पास बैठा उन्हें ध्यान से सुन रहा था। श्रीचरण भी सुनने लगा।

पंडित महानंद उसकी लिखी कविता की कठोर शब्दों में समालोचना कर रहे थे। ऐसा लग रहा था कि शिष्य अभी रो देगा। शायद उसने अभी-अभी कविता लिखने की कोशिश की थी।

श्रीचरण खुद को रोक नहीं सका। उसने पंडित जी का अभिवादन किया और बोला , "एक कमल हालांकि कीचड़ में खिलता है पर हमें पहले उसकी सुंदरता की प्रशंसा करनी चाहिए।" श्रीचरण का तात्पर्य था कि कविता की प्रशंसा करके उसकी समालोचना करनी चाहिए।

पंडित महानदं आगबबूला होकर बाले , "तुमने मुझे बीच में टोका कैसे? तुम इस प्रकार से मुझसे बात कैसे कर सकते हो? क्या तुम मुझसे अधिक जानते हो? "

श्रीचरण ने विनम्र भाव से कहा, "मैं आपकी शरण में आया है और आपका शिष्य बनना चाहता है।" पंडित जी नाराज तो थे ही, उन्होंने उसे शिष्य बनाने से मना कर दिया। श्रीचरण भारी मन से दु:खी होकर वापस लौट आया।

अपने गावं पहुंचकर वह सीधा किशनचदं के पास गया और 'श्रीकृष्ण लीलामतृ ' की पांडुलिपि उन्हें देकर बोला, "मुझे अब यह नहीं चाहिए। पंडित जी ने मुझे वापस भेज

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

दिया।” किशनचदं ने दुःखी श्रीचरण का मनोबल बढ़ाने की बहतु कोशिश की पर कोई लाभ नहीं हुआ।

किशनचदं ने वह पांडुलिपि पंडित महानदं के पास भेज दी। पंडित जी ने जब ‘श्रीकृष्ण लीलामतृ ’ को देखा तो बहतु प्रसन्न हएु । उन्होंने श्रीचरण को एक पत्र लिखा जिसमें उसे अपने शिष्य के रूप में स्वीकार करने की बात लिखी थी।

श्रीचरण पत्र पाकर गद्गद हो गया। कुछ सालों में वह प्रसिद्ध कवि बन गया और अपने पंडित महानंद के माध्यम से वह राजा के दरबार में भी पहुंच गया।

कहानी सुनाकर बेताल ने राजा से पूछा, “राजन! पंडित महानंद जो आरम्भ में इतने घमंडी थे, उन्होंने बाद में श्रीचरण को अपने शिष्य के रूप में क्यों स्वीकार कर लिया?”

राजा विक्रमादित्य ने कहा, “पंडित महानंद बहुत बड़े विद्वान थे। वह जानते थे कि शिष्य की रचना में गलतियां बताकर ही वे शिष्य को सुधार पाएंगे। उस दिन वे शिष्य को उसके भले के लिए ही डांट रहे थे। श्रीचरण की कविता बहुत अच्छी थी। एक विद्वान होने के कारण पंडित महानंद श्रीचरण की प्रतिभा को नजरअंदाज नहीं कर पाए। उन्होंने श्रीचरण को एक योग्य शिष्य के रूप में स्वीकार कर लिया और बाद में राजा से भी परिचय करवा दिया।”

बेताल ने राजा विक्रमादित्य के विवेक की प्रशंसा करी और उत्तर सही होने के कारण वापस पीपल के उड़कर पेड़ पर चला गया।

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

विक्रमादित्य का सिंहासन

बेताल ने बहुत कोशिश की, पर अंत में हार मानकर उसे विक्रमादित्य के साथ तांत्रिक के पास जाना ही पड़ा। बेताल और विक्रमादित्य की कहानियां बहुत प्रसिद्ध हुयीं। धैर्य , दृढ़ संकल्प और विवेक का वे इतिहास में ज्वलंत उदाहरण बनीं।

कई वर्ष बाद उज्जैन में भोज नामक राजा का राज हुआ। उन्हें राजा विक्रमादित्य का पता कैसे चला इसकी मनोरंजक कहानी कुछ इस प्रकार है-

एक बार राजा भोज, अपने आदमियों के साथ जंगल में शिकार करने गए। कुछ जंगली जानवर पास के गांवों में उत्पात मचा रहे थे। राजा भोज उन्हें मारकर वापिस शांति बहाल करना चाहते थे।

सुबह से जंगल में जानवरों का पीछा करते-करते सभी थक गए थे। सूरज भी सिर पर था। सब ने आराम करने के लिए उपयुक्त जगह ढूंढनी शुरू किया। ढूंढते-ढूंढते वे लोग एक बड़े खेत के पास पहुंचे जिसमें मक्के बोए हुए थे। राजा को मक्के देखने में बहुत स्वादिष्ट लगे। खेत के मालिक को ढूंढना शुरू किया गया। वह खेत के बीच में मिट्टी के टीले पर बैठा था।

वे उसके पास गए। राजा तथा उसके लोगों को देखकर उसने उठकर अभिवादन किया और बोला, "महाराज! अहो भाग्य, जो आप लोग यहां पधारे हैं। मैं श्रवण भट्ट हूं और इस खेत का मालिक हूं। कृपया आप लोग यहां आराम करें और मक्के का मजा लें।"

राजा तथा उसके लोग बहुत प्रसन्न हुए। उन लोगों ने वहीं डेरा डाल दिया और मीठे मक्के का मजा लेने लगे।

श्रवण भट्ट जब टीले से उतरा और राजा तथा उसके आदमियों को मक्का खाते देखा तो नाराज हो गया। वह राजा से जाकर बोला, "महाराज, मैं बहुत गरीब आदमी हूं। यह मक्का मेरी जीविका है। यदि आपके आदमी इसे खा लेंगे, तो मैं अपने परिवार को क्या खिलाऊंगा?" राजा ने श्रवण भट्ट को कुछ पैसे दिए, जिसे लेकर उसने राजा का धन्यवाद देकर, वह वापिस टीले पर जाकर बैठ गया।

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

टीले पर बैठने के बाद उसने फिर कहा, “महाराज! इस धरती पर आपका शासन है। फिर यह सारा खेत और सारी फसल तो मुझसे अधिक आपकी हुई। आपने मुझे इसके पैसे क्यों दिये। ये तो सब आपके ही हैं। मैं यह पैसा नहीं ले सकता...” यह कहकर उसने राजा को पैसे लौटा दिए।

श्रवण भट्ट की ऐसी बातें सुनकर राजा घबरा गया। इस टीले पर जरूर कुछ गड़बड़ है... ऐसा सोचते हुए उसने काफी धन देकर श्रवण भट्ट से वह खेत खरीद लिया। खेत लेने के बाद राजा ने टीले को खुदवाना शुरू किया। खुदाई में टीले के नीचे से एक सोने का सिंहासन मिला, जिस पर कीमती पत्थर जड़े हुए थे। साथ ही बत्तीस विचित्र गुड़िया भी मिली। इन्हें देखकर सबके आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा। राजा को ये चीजें इतनी पसंद आयीं कि वे उन्हें अपने महल में ले जाना चाहते थे।

राजा के आदेशानुसार कई लोग मिलकर भी उस सिंहासन को वहां से हिला नहीं पाए। और लोग बुलाए गए फिर भी सिंहासन नहीं हिला। तब किसी सलाहकार ने सलाह दी, “महाराजा, संभव है, यह सिंहासन किसी बड़े राजा का हो। इसे हिलाने से पहले इसकी पूजा करानी चाहिए।”महाराजा को बात पसंद आ गई। कुछ ब्राह्मण बुलाए गए। उन्होंने आकर पूजा अर्चना करी और तब सिंहासन वहां से हिला।

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

सिंहासन को महल में लाया गया। राजा ने शुभ मुहूर्त निकलवाया और जब वे उस पर बैठने जा रहे थे, तभी एक गुड़िया जोर से हंसती हुई बोली, “राजन , रुक जाइए। क्या आपको लगता है कि आप इस सिंहासन के लायक हैं?”

राजा ने अचंभित होते हुए कहा, “क्षमा करो, मैं कुछ समझा नहीं।”

गुड़िया ने कहा, “यह सिंहासन महान राजा विक्रमादित्य का है। जो उनकी तरह महान होगा, वही इस सिंहासन पर बैठने का हकदार होगा। क्या आपको लगता है कि आपका विवेक और न्याय महाराज विक्रमादित्य की तरह है?”

राजा भोज ने कहा “मैं राजा विक्रमादित्य की महानता के बारे में जानना चाहता हूं। मुझे उनके विषय में बताओ...।”

गुड़िया फिर हंसती हुई बोली, “मैं आपको एक कहानी सुनाऊंगी । इसे सुनकर आप खुद ही निर्णय करिएगा कि राजा विक्रमादित्य कितने महान थे..” यह कहकर गुड़िया ने महाराज विक्रमादित्य की महानता की कहानी सुनानी शुरू कर दी। कहानी सुनते-सुनते राजा भोज की आंखें फैलती चली गयीं। उन्हें विश्वास हो गया कि उनका विवेक और न्याय राजा विक्रमादित्य के विवेक और न्याय से कोसों दूर है। राजा विक्रमादित्य सच में महान राजा थे।

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

रहस्य-रोमांच, रोमांटिक, थ्रिलर, हॉरर, लव-रोमांस, सांइस-फिक्शन और बेस्टसेलिंग उपन्यास/ई-बुक्स पढने के लिए आज ही प्रीमियम चैनेल ज्वांइन करे । इसमें आपको ढेरों अलग अलग Genres की नई-पुरानी किताबें आसानी से मिल जायेंगी ।

📚 **JOIN NOW** 📚

अथवा

Official (ऑफिशियल) चैनेल ज्वांइन करे -

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

❤️ *Biggest Books Collection! Enjoy Our Service* ❤️

📚 📖 📝 💌 📝 📖 📚

कहानियों द्वारा बच्चों का बौद्धिक और चारित्रिक निर्माण हो यही इस पुस्तक की प्रेरणास्रोत है। प्राचीन काल में संयुक्त परिवार में दादा–दादी, नाना–नानी बच्चों का कहानियों के माध्यम से चारित्रिक, संस्कारिक निर्माण करते थे। परंतु आजकल एकल परिवार समय के अभाव में अपने दायित्वों से विमुख हो रहे हैं।

हमारे प्रकाशन का प्रयास है कि अभिभावक अपने बच्चों को सुसंस्कारित, चरित्रवान और योग्य नागरिक बना सकें एवं बच्चे भी इस पुस्तक को पढ़कर लाभान्वित हों।

इस पुस्तक में एक आदर्शवादी, नीति–निपुण, कर्तव्यपरायण और न्यायप्रिय राजा विक्रमादित्य की कहानियां है। यह पुस्तक राजा विक्रमादित्य की सूझ–बूझ, ज्ञान और मनोरंजन से परिपूर्ण कहानियों का अनूठा संग्रह है।

children

ISBN: 978-93-5033-906-0

₹ 80

www.maplepress.co.in

Maple Press

https://t.me/Sahitya_Junction_Official

https://t.me/Sahitya_Junction_Official